ISBN: 978-93-5996-662-5

प्राथमिक स्तर पर उर्दू माध्यम के विद्यार्थियों की उर्दू भाषा में प्रवीणता का अध्ययन

(बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ में)



डॉ० राजीव अग्रवाल

पायल चौरसिया

गजेन्द्र कुमार

प्राथमिक स्तर पर उर्दू माध्यम के विद्यार्थियों की उर्दू भाषा में प्रवीणता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर - शिक्षा संकाय

अतर्रा पी. जी. कॉलेज अतर्रा

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.)

पायल चौरसिया

एम.ए. (इतिहास), एम.एड.

गजेन्द्र कुमार

एम.ए. (इतिहास), बी.एड.

प्राथमिक स्तर पर उर्दू माध्यम के विद्यार्थियों की उर्दू भाषा में प्रवीणता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

पायल चौरसिया

गजेन्द्र कुमार

E-book संस्करण: 2023

मूल्य: ₹ 51

ISBN: 978-93-5996-662-5

प्रकाशक—

गजेन्द्र कुमार

ग्राम– जलाला, पोस्ट- पचखुरा (महान), तहसील – हमीरपुर

जिला- हमीरपुर (210502) उत्तर प्रदेश

+91 7607288106

bhupendrakumarjalala76072@gmail.com

प्राक्कथन

प्रत्येक विषय का अपना महत्व होता है और हमारा देश भारत कई विषय एवं भाषाओं का भंडार एकत्र किए हुए है। हम आज एक तकनीकी युग में जी रहे हैं, और अविष्कारों ने दुनिया का चेहरा पूरी तरह से बदल कर रख दिया है, परन्तु साहित्य एवं भाषा का अलग ही रुतबा है। यही कारण है कि हिन्दी और उर्दू के इस संगम ने उर्दू भाषा को छिपने नहीं दिया। साहित्य एवं भाषा शब्दों की अभिव्यक्ति है, इस कारण साहित्य की कथा जब फिल्म में रूपांतरित होती है तो उनका उद्देश्य भले ही समान हो किन्तु माध्यमों में अन्तर आ जाता है। साहित्यकार साहित्य सृजन करते समय शब्दों के सही चुनाव से ही पाठकों के हृदय तक पहुँचने का प्रयास करते हैं, शब्दों के इसी चुनाव ने मुझे उर्दू भाषा पर पुस्तक लिखने की ओर आकर्षित किया है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक- "प्राथमिक स्तर पर उर्दू माध्यम के विद्यार्थियों की उर्दू भाषा में प्रवीणता का अध्ययन" है। इस पुस्तक को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में शिक्षा विकास की प्रक्रिया, भारत में उर्दू शिक्षा का विकास, उर्दू शिक्षा सम्बन्धी समिति एवं उर्दू शिक्षा की वर्तमान स्थिति प्रस्तुत की गयी है।

द्वितीय अध्याय में उर्दू संबंधित शोध कार्य को प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में शोध सम्बन्धी विधि एवं सांख्यिकीय प्रविधि को प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में उर्दू शिक्षा से सम्बंधित प्रदत्तों की स्थिति का विश्लेषण किया गया है।

पंचम अध्याय में उर्दू शिक्षा के शैक्षिक निहितार्थ तथा भावी शोध के निमित्त सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबंध पर आधारित है। प्रत्येक शोध कार्य उद्देश्यपरक होता है, और यह उददेश्य तभी सार्थक हो सकता है जब शोध कार्य के परिणामों का उचित क्रियान्वयन किया जाये। इस कार्य के लिए शोध कार्य को जनमानस के लिए सुलभ बनाने की नितान्त आवश्यकता होती है। इस पुस्तक के रूप में शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से पूर्ण हो सकता है। शोध कार्य के पुस्तक के रूप में प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि होती है,

तथा अन्य बुद्धिजीवियों को अनेक क्षेत्रों में नवीन अनुसन्धान करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही प्राथमिक स्तर पर उर्दू माध्यम के विद्यार्थियों की उर्दू भाषा में प्रवीणता को संवर्धित करने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है, हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियां होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी रहेंगे और आगामी संस्करणों में उन त्रुटियों को दूर कर सकेंगे।

राजीव अग्रवाल

पायल चौरसिया

गजेन्द्र कुमार

विषय सूची

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय

सम्प्रत्यात्मक पृष्ठभूमि



"शैक्षिक अनुसंधान का अन्तिम उद्देश्य सिद्धान्तों का निरूपण करना और शिक्षा के क्षेत्र में नई प्रक्रियाओं को विकसित करना है।"

....डब्ल्यू. एस. मुनरो

अध्याय : शिक्षा विकास की प्रक्रिया

1.1 प्रस्तावना

हिंदी भाषा का भविष्य उनकी विशालता में निहित है राष्ट्रभाषा होने के नाते हिंदी को न तो किसी भाषा से ईर्ष्या हो सकती है और न होनी चाहिए श्री नेम चंद्र सुमन का यह विचार अत्यंत शुभ है कि हिंदी भाषा भाषियों को अन्य भाषाओं के साहित्य के संक्षिप्त इतिहास से परिचित कराया जाए जहां तक उर्दू का संबंध है वह तो हिंदी के निकटतम है उसके बाद शब्द प्रायः एक ही हैं और क्रियाओं के रूप भी एक ही से हैं मुख्त्यार लिपि का भेद है ऐसी दशा में हिंदी भाषा वासियों के लिए उर्दू साहित्य तथा भाषा के रूप रेखा का ज्ञान होना बहुत लाभदायक है।

1.1.1 शिक्षा विकास की प्रक्रिया

शिक्षा मानव को एक अच्छा इंसान बनाती है शिक्षा में उचित आचरण तकनीकी दक्षता और विद्या प्राप्ति समाविष्ट है शिक्षा समाज एक पीढ़ी द्वारा अपने से निकली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज भी संस्कृत की निरंतरता को बनाए रखती है बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों व्यवस्थाओं समाज के प्रति मानव एवं मूल्यों को सीखता है बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है।

शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए सामाजिक रथ करती है तथा समाज का सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है।

1.1.2 प्राथमिक शिक्षा ज्ञान की आधारशिला

प्राथमिक शिक्षा हर किसी के जीवन में महत्वपूर्ण होती है प्राथमिक शिक्षा से ही बच्चों को चीजों का बोध होता है, अर्थात उनके सोचने और समझने के कौशल का विकास होता है प्राथमिक शिक्षा आधार तैयार करती है जो कि व्यक्ति के पूरे काम आती है। हम प्राथमिक शिक्षा के सीखी गई गतिविधियों का अनुकरण करके उन्हें अपनी अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं जिससे कि उनका भी आधार मजबूत हो। प्राथमिक शिक्षा ही हमारा अच्छा बुरा तय करती है कि हम भविष्य में किस तरह के व्यक्ति होंगे।

अगर प्रारंभिक शिक्षा अच्छी तरह से ग्रहण की जाए तो बेहतर भविष्य के निर्माण के लिए कई रास्ते खुल जाते हैं यही नहीं शिक्षा से ही हमें जानकारी हासिल होती है, हमारे अंदर तकनीकी कौशल का विकास होता है इसके साथ ही शिक्षा हमें मानसिक सामाजिक और बौद्धिक रूप से मजबूत बनाता है।

1.1.3 प्राथमिक शिक्षा का विकास

बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में भारतीय लोगों को यह महसूस होना शुरू हुआ कि देश को राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत और परंपरा के आधार पर शिक्षा को एक राष्ट्रवादी प्रणाली की आवश्यकता है 1996 कांग्रेस के कलकत्ता सम्मेलन में एनी बेसेंट ने घोषणा की कि पूरे देश में एक राष्ट्रीय शिक्षा का आयोजन किया जाना चाहिए गोपाल कृष्ण गोखले एक राष्ट्रवादी नेता और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सक्रिय सदस्य थे उन्हें 1905 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में भी चुना गया था और ग्राम एक राष्ट्रवादी नेता के रूप में गोखले ने भारत के सामाजिक राजनीतिक जागरण के लिए प्राथमिक शिक्षा के महत्व की कल्पना की उन्होंने सरकार को अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा के सिद्धांत को स्वीकार करने के लिए प्रयास किए। प्राथमिक शिक्षा की मांग को इस तथ्य से मजबूत किया गया था की बरोडा के महाराजा सयाजी राव गायकवाड़ ने अपने राज्य के भीतर प्राथमिक शिक्षा को मुफ्त और अनिवार्य बना दिया था पूर्णविराम इस प्रयास ने गोखले को प्रेरित किया और विराम यह इकाई भारत में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के रूप में आई 4 विराम इसके पश्चात गोपाल कृष्ण गोखले ने सन 1910 ईस्वी में प्राथमिक शिक्षा के संबंध में गोखले विधेयक प्रस्तुत किया तथा 1929 ईस्वी में प्राथमिक शिक्षा से संबंधित हर टांग समिति की भी गठित की गई थी।

सन 1937 ईस्वी में महात्मा गांधी ने वर्धा शिक्षा सम्मेलन में बेसिक शिक्षा योजना प्रस्तुत की थी। डॉ जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में वर्धा शिक्षा को अंतिम रूप देने के लिए क्वामा डॉक्टर जाकिर हुसैन समिति का गठन हुआ इसे दो भागों में प्रस्तुत किया गया। प्रथम रिपोर्ट दिसंबर सन 1937 तथा दूसरी अप्रैल सन 1938 में प्रस्तुत की गई थी।

1.1.4 उर्दू का विकास

उर्दू भाषा हिंदी आर्य भाषा है उर्दू भाषा हिंदी भाषा की एक मानकीकृत रूप मानी जाती है उर्दू में संस्कृत के तत्सम शब्द नियम है और अरबी फारसी और संस्कृत के तद्भव शब्द अधिक है। यह मुक्त या दक्षिण एशिया में बोली जाती है। यह भारत की शासकीय भाषाओं में से एक है तथा पाकिस्तान की

राष्ट्रभाषा है। इसके अतिरिक्त भारत के राज्य जम्मू और कश्मीर के मुख्य प्रशासनिक भाषा है साथ ही तेलंगाना, दिल्ली, बिहार और उत्तर प्रदेश की अतिरिक्त शासकीय भाषा है।

उर्दू बोलने वाले स्थान- पाकिस्तान, भारत, मारीशस, दक्षिण अफ्रीका, बहरीन, फिजी, कतर, ओमान, संयुक्त अरब अमीरात, यूनाइटेड किंग्डम, जर्मनी, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, सुरिनाम, ईरान, अफ़गानिस्तान, तजाकिस्तान उज्बेकिस्तान।

मातृभाषी वक्ता - 10 - 15 करोड़

1.1.4.1 उर्दू का उदगम

उर्दू का प्रारंभिक रूप या तो सूफी फकीरों की बानी में मिलता है या जनता की बोलचाल में को विराम भाषा की दृष्टि से उर्दू के विकास में पंजाबी का प्रभाव सबसे पहले दिखाई पड़ता है। 17वीं और 18वीं शताब्दी में ब्रजभाषा का गहरा प्रभाव उर्दू पर पड़ा और बड़े-बड़े विद्वान कविता में ग्वालियर भाषा को अधिक शुद्ध मानने लगे किंतु उसे युग में कुछ विद्वानों और कवियों ने उर्दू को नया रूप देने के लिए ब्रज के शब्दों का बहिष्कार किया और अरबी-फारसी के शब्द बढ़ाने लगे। सच तो यह है कि उर्दू भाषा के बनने में जो संघर्ष जारी रहा उसमे ईरानी और हिंदुस्तानी तब तो एक-दूसरे से टकराते रहे और धीरे-धीरे हिंदुस्तानी तत्व ईरानी तत्व पर विजय पाता गया। **"अनुमान लगाया गया कि जिस भाषा को उर्दू कहा जाता है उसमें 85% शब्द वही हैं जिनका आधार हिंदी का कोई ना कोई रूप है शेष 15% में अरबी फारसी तुर्की और अन्य भाषाओं के शब्द सम्मिलित है"** जो सांस्कृतिक कारणों से मुसलमान शासकों के ज़माने में स्वाभाविक रूप से उर्दू में घुल-मिल गए थे। इस समय उर्दू उत्तरी भाषा के कई भागों में मातृभाषा के रूप में है।

1.1.4.2 उर्दू शब्द की उत्पत्ति

उर्दू शब्द मूलतः तुर्की भाषा का है तथा इसका अर्थ है शाही शिविर या (खेमा) । तुर्कों के साथ यह शब्द भारत में आया और इसका प्रारंभिक अर्थ खेमा या सैन्य पड़ाव था। शाहजहाँ ने दिल्ली में लाल किला बनवाया। यह भी एक प्रकार से उर्दू (शाही और सैनिक पड़ाव) था, किंतु बहुत बड़ा था अतः इसे उर्दू ना कह कर उर्दू-ए-मुअल्ला कहा गया तथा यहाँ बोली जाने वाली भाषा जबान-ए-उर्दू- मुअल्ला (श्रेष्ठ शाही पड़ाव की भाषा) कहलायी भाषा विशेष के अर्थ में उर्दू शब्द इस जबान-ए-उर्दू- मुअल्ला का संक्षेप है।

"मुहम्मद हुसैन आजाद उर्दू उत्पत्ति ब्रजभाषा से मानते हैं आब-ए-हयात में वे लिखते हैं कि हमारी जबान ब्रजभाषा से निकली है।"

1.1.4.3 उर्दू का आधुनिक विकास

नेशनल इनसाइक्लोपीडिया के अनुसार 2010 के आंकड़ों की मानें तो उर्दू विश्व में बोली जाने वाली भाषाओं में 21वें स्थान पर है उर्दू भाषा में अन्य भाषाओं का मेल होने से यह स्थानीय तो हो गई है यहां तक कि पाकिस्तान की उर्दू भाषा में भी इसका प्रभाव देखने को मिलता है इस प्रकार उर्दू में स्थानीय अंतर हो गया है।

1.1.5 भारत में उर्दू शिक्षा का विकास

भारत में उर्दू शिक्षा का विकास मध्य काल से चला आ रहा है प्रोग्राम साथ ही पश्चिमी संपर्क के फलस्वरूप 19वीं शताब्दी के मध्य में भारतवर्ष की दूसरी भाषाओं की तरह उर्दू में भी नई चेतना का आरंभ हो गया और आर्थिक सामाजिक तथा राजनीतिक परिवर्तनों के कारण नई विचारधारा का उद्भव हुआ उर्दू में नव जागृति के वास्तविक चिन्ह 18 सो 57 के विद्रोह के बाद से ही मिलते हैं बीसवीं शताब्दी में साहित्यिक स्कूलों के झगड़े समाप्त होकर विचारधाराओं के आधार पर साहित्यिक रचना होने लगी और उर्दू साहित्य ने भी बढ़-चढ़कर इसमें अपनी भूमिका निभाई।

1.1.5.1 मध्यकाल में उर्दू शिक्षा

भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना होते ही इस्लामी शिक्षा का प्रसार होने लगा फारसी जानने वाले ही सरकारी कार्य के योग्य समझे जाने लगे 4 विराम हिंदू अरबी पढ़ने लगे और विराम बादशाहो और अन्य शासकों की व्यक्तिगत और रूचि के अनुसार इस्लामी आधार पर उर्दू शिक्षा दी जाने लगी। इस्लाम के संरक्षण और प्रचार के लिए मस्जिदें बनती गई साथ ही मक्का तो मदरसों और पुस्तकालयों की स्थापना होने लगी मकतब प्रारंभिक शिक्षा के केंद्र होते थे और मदरसे उच्च शिक्षा के प्रोग्राम ख्वाबों की शिक्षा धार्मिक होती थी विद्यार्थी कुरान के कुछ अंशों का कंठस्थ करते थे और विराम वह पढ़ना लिखना गणित अजीर्ण डीसी और चिट्ठी पत्री भी सीखते थे इनमें हिंदू बालक भी पढ़ते थे। मकतब ओं में शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी मदरसों में प्रविष्ट होते थे यहां प्रधानता धार्मिक शिक्षा दी जाती थी साथ ही इतिहास व्याकरण साहित्य तर्कशास्त्र गणित कानून आज की शिक्षा दी जाती थी मुसलमान अरबी उर्दू को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ते थे तथा शिक्षा व्यवस्था अनुदान पर आधारित थी।

1.1.5.2 ब्रिटिश काल में उर्दू शिक्षा

अंग्रेजों द्वारा भारत में शिक्षा के विकास की शुरुआत की गई परंतु शैक्षिक स्तर निम्न नहीं रहा परंतु सन 1781 सदी में वारेन हेस्टिंग्स द्वारा कोलकाता में मदरसा की स्थापना हुई इसका उद्देश्य मुस्लिम कानूनों तथा इससे संबंधित अन्य विषयों की शिक्षा देना था प्रोग्राम लेकिन जैसे ही वर्ष बीत गए उर्दू शिक्षा भी पतन की ओर चल चली गई मिशनरियों ने यह निष्कर्ष निकाला कि पाश्चात्य शिक्षा के प्रचार से भारतीयों को अनेक परंपरागत धर्म में आस्था समाप्त हो जाएगी तथा वह ईसाई धर्म ग्रहण करने लगे 4 ग्राम तदुपरांत 18 से 13 ईसवी के चार्टर एक्ट के शुरुआत से भारत में स्थानीय विद्वानों को प्रोत्साहित करने तथा देश में आधुनिक ज्ञान को प्रारंभ एवं उन्नत करने जैसे उद्देश्यों को रखा गया।

1.1.5.3 आधुनिक काल में उर्दू शिक्षा

आधुनिक काल में उर्दू शिक्षा की स्थिति सोचनीय है इसलिए अलीगढ़ मीडिया न्यूज़ अलीगढ़ अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की भाषा विज्ञान विभाग द्वारा कतर स्थित दोहा विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ रिजवान अहमद ने कला संकाय लॉन्च में सूचीबद्ध का पहचान तथा भाषाई बदलाव उर्दू की उपनिवेशवादी तथा उत्तर उपनिवेशवाद ई परी कल्पनाएं विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। जिसमें उर्दू भाषा के विविध लाजो तथा भारतीय की विभिन्न नस्लों के लिए इसके विभिन्न अर्थों पर विस्तार से चर्चा की डॉ अहमद ने कहा कि भारत के विभाजन से पूर्व पैदा होने वाली नस्ल उर्दू को मुस्लिम पहचान के लक्षण के रूप में नहीं देती है उन्होंने कहा कि उर्दू की विशेष ध्वनियों का विभाजन जो मुसलमानों तथा हिंदुओं में बराबर रूप से पाया जाता है इससे यह भी सिद्ध होता है कि इन आवाजों का प्रयोग मुस्लिम पहचान के साथ विशेष नहीं है 4 विराम डॉक्टर रिजवान ने कहा कि मुसलमानों तथा हिंदुओं की विभिन्न नस्लों उर्दू भाषा को विभिन्न अर्थ देती हैं और ग्राम उन्होंने कहा कि प्राचीन नस्ल के मुकाबले मुस्लिम युवा उर्दू के साथ स्वयं को नहीं जोड़ते। उन्होंने उर्दू के 116 वर्ष इतिहास पर चर्चा करते हुए कहा कि उर्दू के संकेत आत्मक अर्थों में यह परिवर्तन उन सामाजिक एवं राजनैतिक का प्रतिबिंब है जो बीसवीं शताब्दी में यहां के मुसलमानों के अंदर आई है उन्होंने बल देते हुए कहा कि भारत में साक्षरता कार्यक्रम और शिक्षा के तरीके में आने वाले परिवर्तन में भी उर्दू के संकेत आत्मक अर्थों में परिवर्तन हुआ क्योंकि बहुत से मुसलमानों ने उर्दू लिखने के लिए देवनागरी को अपनाया जिससे आधुनिक काल उर्दू भाषा में परिवर्तन के कारण उर्दू शिक्षा के स्तर में कमी आई।

1.1.5.4 उर्दू माध्यम के प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना

1.1.6 उर्दू शिक्षा के संबंध में शिक्षा आयोग

भारत सरकार ने देश में अपने त्रिभाषा फार्मूले के तहत स्कूल जाने वाले बच्चों में अंग्रेजी के अलावा हिंदी उर्दू तथा एक आधुनिक भारतीय भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न सरकारी स्कूलों में भाषा शिक्षकों की नियुक्ति हेतु वित्तीय सहायता योजना आरंभ की है उठ जाओ इस योजना का उद्देश्य सरकारी स्कूलों में भाषा शिक्षकों की आवश्यकता को पूरा करने तथा देश में उर्दू भाषा के साथ-साथ भारतीय भाषा के प्रसार को प्रोत्साहित करना भी है।

इस योजना के तीन भाग हैं-

- हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी शिक्षक
- जिन जिलों में पर्याप्त अल्पसंख्यक जनसंख्या है उन्हें स्कूलों में उर्दू शिक्षक
- हिंदी भाषी राज्य संघ राज्य क्षेत्रों के स्कूलों जहां हुए मांग करें में तीसरी भाषा पढ़ाने के लिए आधुनिक भारतीय भाषा शिक्षकों की व्यवस्था।

उर्दू के संवर्धन की मांग को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने वर्ष 1972 में उर्दू के संवर्धन हेतु एक समिति नियुक्त की जिसने वर्ष 1975 में सरकार को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस समिति की सिफारिशों के अनुसरण में भारत सरकार ने राज्य संघ राज्य क्षेत्रों में उर्दू शिक्षकों की नियुक्ति की।

- वर्ष 2008 आमली 2009 के दौरान अल्पसंख्यकों के कल्याण हेतु प्रधानमंत्री नए 15 सूत्रीय कार्यक्रम के अनुसरण में उन स्थानों जहां जनसंख्या के 25% से अधिक उर्दू भाषी समुदाय है में उर्दू शिक्षकों की नियुक्ति।
- इस योजना के तहत राज्य सरकार ने भाषा शिक्षक के वेतन संरचना पर आधारित नियुक्त उर्दू शिक्षक के वेतन हेतु अब 100% सहायता स्वीकार्य है।

1.1.7 उर्दू शिक्षा की वर्तमान स्थिति

वर्तमान समय में उर्दू शिक्षा की स्थिति अत्यंत सोचनीय है इस विषय पर उत्तर प्रदेश के अहमद रशीद सरवानी ने अफसोस जताते हुए कहा कि आज उर्दू मीडियम प्राथमिक विद्यालय तो है पर पर्याप्त

शिक्षक नहीं है और जहां विद्यालय वार शिक्षक दोनों हैं वहां विषय को रुचिकर नहीं बनाया जाता है उर्दू मीडियम प्राथमिक विद्यालयों उर्दू भाषा की कक्षाएं औपचारिकता मात्र के लिए भी नहीं लगी। छात्र-छात्राओं को किताब तो दी जाती है परंतु उस किताब को पढ़ाया नहीं जाता है वर्तमान में छात्र छात्राओं को उनके उर्दू विषय के प्रति रुचि को बढ़ाना आवश्यक है अन्यथा उर्दू भाषा एक विषय मात्र बनकर रह जाएगा।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

हमारे देश के संविधान में आठवीं अनुसूची के अंतर्गत 22 भाषाओं को सम्मिलित किया गया है जिनमें से एक उर्दू भाषा भी है तथा तथा यह कई राज्यों तेलंगाना दिल्ली बिहार और उत्तर प्रदेश की सरकारी भाषा भी है। इन सभी के बावजूद यह भाषा सरकार द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में एक भाषा के रूप में पढ़ाई जाने के लिए सम्मिलित की गई है किंतु प्राथमिक विद्यालयों की खस्ताहाल उर्दू भाषा शिक्षा को देखकर निराशा होती है। छात्र-छात्राओं को उर्दू की वर्णमाला भी लिखनी नहीं आंती तथा ऐसा प्रतीत होता है कि वहां के शिक्षक सिर्फ समय व्यतीत करने के लिए ही विद्यालय आते हो।

1.3 समस्या कथन

अध्ययन की आवश्यकता शोध कतरी द्वारा की गई संबंधित विषय के अध्ययन के आधार पर समस्या जिस रूप में प्रकट हुई उसका कथन निम्न प्रकार है-

"प्राथमिक स्तर पर उर्दू माध्यम के विद्यार्थियों की उर्दू भाषा में प्रवीणता का अध्ययन"

1.4 अध्ययन समस्या का औचित्य

वर्तमान समय में अनिवार्य शिक्षा अधिनियम के अनुसार माध्यमिक स्तर स्वीकार किया गया परंतु प्राथमिक स्तर पर अल्पसंख्यक शिक्षा की मांग के आधार पर उन्हें भाषा संबंधी शिक्षक न के बराबर ही दी जाती है। प्राथमिक स्तर पर उर्दू भाषा शिक्षण कार्य नगण्य है आवश्यक है कि यदि प्राथमिक स्तर पर उर्दू भाषा विषय के रूप में है तथा उर्दू शिक्षकों की नियुक्ति की जाती है तो उर्दू भाषा के महत्व को भी समझना समझा जाए तथा विषय के प्रति छात्र छात्राओं में रुचि जागृत की जाए।

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

निहित शब्दों की व्याख्या से तात्पर्य अध्ययन की गई समस्या को चिंतन द्वारा संपूर्ण समस्या के क्षेत्र बाहर निकाल कर स्पष्ट करना है।

1.5.1 प्राथमिक स्तर

"कक्षा 1 से 5 तक को निम्न प्राथमिक स्तर तथा कक्षा 6 से 8 को उच्च प्राथमिक स्तर कहा जा सकता है निम्न प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की आयु 6 से 11 वर्ष तथा उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की आयु 11 से 14 वर्ष होती है।"

1.5.2 उर्दू माध्यम

1.5.3- विद्यार्थी -

संस्कृत सुभाषित ओं के अनुसार-

काक चेष्टा बको ध्यानं श्वान निद्रा तथैवच ।

अल्पाहारी ग्रह त्यागी विद्यार्थी पंच लक्षणम् ॥

अर्थात् विद्यार्थी के पांच लक्षण हैं - "कौवे की तरह चेष्टा, बगुले की तरह ध्यान, कुत्ते की तरह नींद, कम भोजन करने वाला, अपने माता-पिता और घर से अधिक मोह न रखने वाला"

1.5.4 उर्दू भाषा ज्ञानकोष विकिपीडिया के अनुसार -

"खड़ी बोली हिंदी में अरबी-फारसी के मेल से जो भाषा बनी हुआ है उर्दू भाषा कहलायी ।"

Wikipedia- org --- " उर्दू हिंदुस्तानी भाषा की एक मानकीकृत रूप है जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्द कम है तथा अरबी-फारसी व संस्कृत के तद्भव शब्द ज्यादा है।"

1.5.5 प्रवीणता

कैम्ब्रिज डिक्शनरी के अनुसार-

"प्रतिगमन विश्लेषण से पता चला कि प्रताप पढ़ना दोनों भाषाओं में शब्दावली के आकार और ध्वन्यात्मक जागरूकता के स्तर से संबंधित"

1.5.6 अध्ययन

"किसी विषय के सब अंगों या गूढ़ तत्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे देखने या पढ़ने को अध्ययन कहते हैं।"

1.6 अध्ययन का उद्देश्य

शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

- प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों द्वारा दी जा रही उर्दू शिक्षा के स्तर का अध्ययन करना।
- उर्दू शिक्षण की प्राथमिक स्तर की पाठ्य-पुस्तको का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर पर छात्र-छात्राओं में उर्दू विषय के प्रति सजगता का अध्ययन करना।
- उर्दू शिक्षा संबंधी आधुनिक प्रवृत्तियों का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर पर शिक्षण अनुभव के आधार पर उर्दू के संदर्भ में शिक्षकों द्वारा उर्दू भाषा संबंधी कौशलों का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर पर शिक्षण अनुभव के आधार पर शिक्षकों की उर्दू भाषा के प्रति सजगता का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर पर उर्दू भाषा के प्रति लिंग भेदभाव शिक्षा प्रदान करने का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर पर कंप्यूटरीकृत उर्दू शिक्षा का अध्ययन करना।
- उर्दू शिक्षा से संबंधित विभिन्न सॉफ्टवेयरों अध्ययन करना।
- उर्दू के संबंध में विभिन्न उर्दू सॉफ्टवेयरों का शिक्षकों द्वारा उपयोग अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर पर उर्दू की स्थिति का अध्ययन करके समस्याओं के प्रति सुझाव निर्मित करना।

1.7- परिकल्पना

शोध संबंधी परिकल्पना निम्नलिखित हैं। "बांदा जनपद के प्राथमिक स्तर पर बोर्डों के आधार पर छात्र-छात्राओं में उर्दू भाषा की रुचि का अध्ययन"

1.8 परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध में शोधार्थिनी द्वारा शोध की कुछ सीमा है जिसके कारण वह अपने इस शोध कार्य को अधिक विस्तृत नहीं कर सकती शोध करती। शोधार्थिनी के समक्ष एक समय सीमा निश्चित है जिसमें उसे अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत करना है।

शोध अध्ययन की परिभाषाएं निम्नलिखित हैं-

- प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश के बांदा जनपद को सम्मिलित किया गया है।
- इस शोध अध्ययन में बांदा जनपद, बबेरू तहसील के हरदौली ग्राम एवं बबेरू क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है।
- शोध अध्ययन में परिषदीय प्राथमिक विद्यालय एवं मदरसा को सम्मिलित किया गया है।
- शोध अध्ययन में उर्दू मीडियम प्राथमिक विद्यालय के छात्र एवं मदरसा के छात्र-छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।
- छात्र-छात्राओं की विषय सजगता को ज्ञात करने के लिए 'उर्दू भाषा जागरूकता प्रश्नावली' प्रयोग में लायी गयी।

1.9 - अध्ययन का महत्व

देश की तहजीब उर्दू एवं हिंदी भाषा में ही बसती है इसलिए अंतरराष्ट्रीय दृष्टि से भी इस भाषा का अधिक महत्व है यह भाषा कवियों एवं साहित्यकारों की भाषा बनकर अस्तित्व में आयी इसलिए इस भाषा के प्रति लोगों की रुचि बढ़ती रही, परन्तु जब तक भाषा को सीखने का प्राथमिक स्तर सुडौल नहीं होगा तब तक भाषा का अध्ययन नहीं किया जा सकता है।

देश के लगभग कई राज्यों में उर्दू भाषा को प्राथमिक स्तर पर भाषा विषय के रूप में पढ़ाया जाता है तथा उर्दू शिक्षण का मदरसा बोर्ड भी अलग है यदि छात्र मदरसा बोर्ड से अध्ययन करने का इच्छुक है तो वह मदरसा बोर्ड से भी अपने उर्दू के शैक्षिक स्तर को प्रशस्त कर सकता है।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन



"किसी भी नेक कार्य को करने से पहले उससे सम्बन्धित साहित्य के विषय में जानने से शोधकर्ता को आसानी रहती है।"

....पी. वी. यंग

द्वितीय अध्याय : संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

संबंधित विषय या साहित्य का अध्ययन शोध का अभिन्न अंग होता है यह शोध कार्य में आने वाली समस्याओं को पहचानने में सहायक तथा अनुसंधान का प्राथमिक आधार है। शोध प्रबंध की वास्तविक योजना एवं संचालन से पूर्व शोधार्थी अपनी समस्या से संबंधित उपलब्ध साहित्य का अध्ययन इसलिए करता है, क्योंकि यह उसे अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है। विषय संबंधी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है तथा नई समस्याओं की जानकारी देता है यह परिणामों के सत्यापन के लिए भी आवश्यक है इसके अभाव में कोई भी अनुसंधान उच्च स्तर का नहीं हो सकता।

2.2 प्राथमिक शिक्षा से संबंधित शोध अध्ययन

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंधन में प्राथमिक शिक्षा से संबंधित शोध अध्ययन निम्नलिखित हैं-

पाठक मनोज कुमार (2008) "उत्तर प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा के व्यवस्थापन व विकास में ग्राम शिक्षा समिति की भूमिका का आलोचनात्मक अध्ययन" से निम्नलिखित निष्कर्ष स्पष्ट हुए हैं।

प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत ग्राम विकास समिति द्वारा व्यवस्था पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता है।

व्यवस्थाओं नाम पर सिर्फ कागजों पर लेखापूर्ति की जा रही है।

2.3 उर्दू शिक्षा से संबंधित शोध कार्य

इस शोध प्रबंधन में उर्दू शिक्षा से संबंधित शोध कार्य निम्नलिखित हैं-

- निजामी अब्दुल वाहिद (2013) "उर्दू में मजहबी अदब मुताला व जायजा" मौलाना आजाद यूनिवर्सिटी हैदराबाद के प्रस्तुत शोध में निम्न निष्कर्ष स्पष्ट हुए हैं।
- उर्दू में मजहबी शिक्षा का प्रभाव अधिक परिलक्षित होता है। मुस्लिम छात्रों एवं छात्राओं में अन्य की अपेक्षा उर्दू का शब्द कोश अच्छा है।

❖ तंबोली बेनजीर एस (2015) "उर्दू माध्यम के विद्यार्थियों में आंग्ल भाषा वचन कार्यक्रम सम्प्रेषण उपागम शीलता की प्रभावशीलता" तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ के प्रस्तुत शोध में निष्कर्ष स्पष्ट हुए हैं।

❖ उर्दू माध्यम के छात्र आंग्ल भाषा के समाचार पत्र को नहीं पढ़ पाते हैं। उर्दू माध्यम के छात्रों का अंग्रेजी शब्दकोश कमजोर है।

❖ नुसरत जान (2015) "उर्दू जवान व अदब की तरक्की में साहित्य अकादमी का हिस्सा" यूनिवर्सिटी ऑफ कश्मीर से यह निष्कर्ष स्पष्ट हुए -

उर्दू भाषा का बोल-चाल की भाषा में उपयोग तो किया जाता है परंतु शिक्षण कार्य बहुत कमजोर है। उर्दू भाषा को अपनी तरक्की के लिए अन्य साहित्यिक अकादमियों के सहयोग की आवश्यकता पड़ती है।

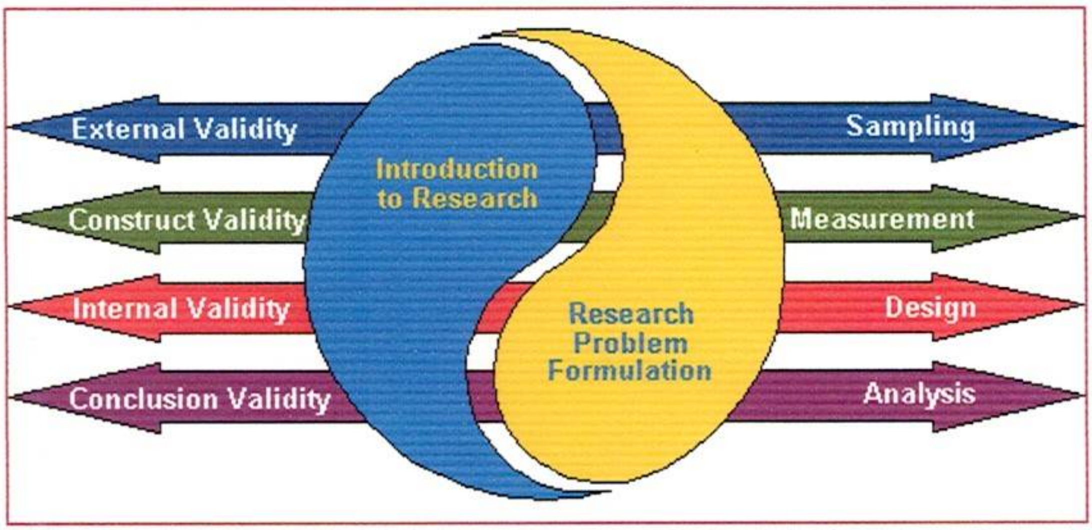
2.4 निष्कर्ष

उर्दू शिक्षा से संबंधित उपर्युक्त शोधों से यह निष्कर्ष निकलता है कि उर्दू शिक्षा सुधार, उर्दू की प्राथमिक शिक्षा तथा उर्दू की उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा पर शोध का नगण्य है, यद्यपि उर्दू के विकास के लिए उर्दू जबान में रुचि दिखाई गई तथा उर्दू की अक्कासी पर शोध कार्य अधिक किया गया, यही कारण है कि उर्दू भाषा उच्च स्तरीय पुस्तकों में सिमट कर रह गई तथा प्राथमिक स्तर पर अपनी पहचान बनाने के स्थान पीछे होती चली गई।

अतः शोधार्थी द्वारा इस विषय पर शोध करने का निश्चय किया गया।

तृतीय अध्याय

अनुसंधानात्मक आकल्पन एवं क्रियान्वयन



"शोधकार्य के मंत्रो का नक्शा दे देना हमेशा सम्भव नही होता इसलिए उनके महत्वपूर्ण ब्यौरों का वर्णन करना आवश्यक है।"

....डब्ल्यू. एम. टवर्स

तृतीय अध्याय : शोध अभिकल्प

अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया है जो केवल बाह्य लक्षण एवं खोजबीन पर विश्वास नहीं रखती वरन् यह किसी समस्या का गहनता से निरीक्षण करने का मुख्य प्रत्यय है। अनुसंधान के द्वारा किसी समस्या का विशिष्ट रूप से समाधान प्रस्तुत किया जा सकता है। अनुसंधान के आधार पर ही किसी समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण कर समाधान प्राप्त किया जा सकता है अनुसंधान एक व्यवस्थित एवं नियंत्रित अध्ययन है, जिसके अंतर्गत संबंधित चरों एवं घटनाओं के पारस्परिक संबंधों का अन्वेषण तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधि तथा वैज्ञानिक विधि के द्वारा किया जाता है तथा प्राप्त परिणामों से वैज्ञानिक निष्कर्षों नियमों एवं सिद्धांतों की रचना खोज तथा पुष्टि की जाती है जैसा कि रेडमैन एवं मोरी ने अपने कथन में स्पष्ट किया है कि-

"नवीन ज्ञान प्राप्त करने का क्रमबद्ध प्रयास ही अनुसंधान है।"

3.1 शोध कार्य प्रणाली

शोध कार्य प्रारंभ करने से पूर्व सूरत का ट्री शोधार्थी द्वारा 102 प्रारूप तैयार किया गया जिसके अंतर्गत क्रमबद्ध रूप में प्रत्येक सोपान के संबंध में विवरण दिया गया सर्वप्रथम शोध कार्य से संबंधित ढांचा तैयार किया गया है जिसमें निम्नलिखित बातों का अध्ययन किया गया है-

- अनुसंधान विधि
- प्रतिदर्श का प्रारूप एवं प्रतिचयन विधि
- शोध में प्रयुक्त उपकरण
- प्रदत्तों का संकलन
- सांख्यिकीय विधियों का चयन

3.1.1 अनुसंधान विधि

किसी भी अनुसंधान कार्य में कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं, जो कि अतीत में घटित हो चुकी होती हैं तथा कुछ का अध्ययन वर्तमान में उनके स्वरूप के आधार पर किया जाता है तथा कुछ घटनाओं के भावी स्वरूप को जानने के लिए प्रयोग करने होते है। इसके लिए अनेक अनुसंधान विधियों, जैसे- ऐतिहासिक अनुसंधान, प्रयोगात्मक अनुसंधान, वर्णनात्मक अनुसंधान आदि का प्रयोग किया जाता है, चूंकि प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य "प्राथमिक स्तर पर उर्दू माध्यम के विद्यार्थियों की उर्दू भाषा में प्रवीणता का अध्ययन" करना है।

अत: यह वर्णनात्मक शोध है। वर्णनात्मक अनुसंधान एक ऐसा अनुसंधान हैं जो वर्तमान समस्या या परिस्थिति का वैज्ञानिक विश्लेषण एवं व्याख्या करता है और इस शोध अध्ययन में शोध विधियों का प्रयोग वर्तमान स्थिति का वर्णन एवं व्याख्या करने हेतु किया गया है।

वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत वर्तमान घटनाओं, संबंधों तथा तथ्यों के अध्ययन को अधिक बल तथा महत्व दिया जाता है, और यह पता लगाया जाता है कि इसका वर्तमान स्वरूप कैसा है। इस प्रकार के अनुसंधान में प्राय: क्षेत्र अध्ययन, साक्षात्कार, अनुसूची, प्रश्नावली, अंतर्वस्तु विश्लेषण आदि अध्ययन विधियों सम्मिलित होती है

वर्णनात्मक अनुसंधान के प्रकार -

वर्णनात्मक अनुसंधान को अनेक प्रकार से वर्गीकृत करना का प्रयास किया गया है जिसमें वान डेलेन (2004) के अनुसार वर्गीकरण अग्रवत है-

- विकासात्मक अध्ययन
- अंतर सम्बन्धों का अध्ययन
- सर्वेक्षण शोध का अध्ययन।

3.1.2 अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि शोध अध्ययन में आंकड़ों का संग्रहण सर्वेक्षण विधि द्वारा सहजता पूर्वक किया जा सकता है प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि द्वारा जीव संख्या में से एक न्यादर्श लेकर शोध की संपूर्ण प्रक्रिया को प्रतिस्थापित किया गया है क्योंकि सर्वेक्षण विधि द्वारा शोध से संबंधित समस्या के विषय में चयनित विद्यालय एवं छात्रों द्वारा ऐसे प्रतिनिधि आंकड़े एकत्रित कर सकते हैं जो सभी छात्र-छात्राओं को लगभग पूर्णरूपेण प्रतिबिंबित करेंगे।

3.1.3 सर्वेक्षण विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि के माध्यम से प्राथमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की उर्दू भाषा में प्रवीणता की जानकारी आसानी से प्राप्त की जा सकती थी। तथा इस विधि के माध्यम से वैज्ञानिक प्रतिचयन का आधार होने से प्रतिनिधि आंकड़े संकलित किए जा सकते थे। चूंकि सामाजिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों में सर्वेक्षण एक समस्या से संबंधित आंकड़ों के संकलन का महत्वपूर्ण साधन व उपकरण है। शैक्षिक क्षेत्रों में सर्वेक्षण वर्णनात्मक अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग रहा है।

सर्वेक्षण विधि का प्रयोग समाज शास्त्र, मनोविज्ञान तथा शिक्षा के शोधों में अधिक होता है इस प्रक्रिया के अंतर्गत अध्ययन के लिए संभाव्यता सिद्धांत के आधार पर केवल एक समष्टि के प्रतिदर्श द्वारा ही एक समस्या और शैक्षिक क्षेत्र से संबंधित एक समस्या अथवा स्थिति के विषय में ऐसे प्रतिनिधि आंकड़े संकलित किए जा सकते हैं जो कि संबंधित समष्टि के स्वरूप को लगभग पूर्णरूपेण प्रतिबिंबित करते हैं ऐसे वैज्ञानिक प्रतिचयन पर आधारित सर्वेक्षण को ही प्रतिदर्श सर्वेक्षण कहते हैं तथा ऐसे वैज्ञानिक प्रतिदर्श सर्वेक्षण पर आधारित अध्ययन अध्ययनों को सर्वेक्षण अनुसंधान कहते हैं।

3.2 अध्ययन समष्टि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत बांदा जनपद के बबेरू क्षेत्र के हरदौली तथा बबेरू को सम्मिलित किया गया। जिसमें 53 मदरसा बोर्ड के छात्र एवं छात्राएं तथा 47 उर्दू मीडियम प्राथमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं का चयन किया गया।

3.3 प्रतिदर्श चयन

प्रस्तुत शोध का प्रतिदर्श चयन दो स्तरों पर किया गया है -

3.3.1 विद्यालय का चयन

प्रस्तुत शोध में उर्दू माध्यम के दो बोर्डों तथा बोर्डों से संबंधित 2 विद्यालयों का चयन किया गया है जिसमें हरदौली में स्थित उर्दू मीडियम प्राथमिक विद्यालय तथा बबेरू में स्थित गोसिया मदरसा को सम्मिलित किया गया है।

3.3.2 विद्यार्थियों का चयन

प्रस्तुत शोध प्रबंध में उर्दू मीडियम के विद्यार्थी विद्यार्थियों का चयन उद्देश्य पूर्ण विधि से किया गया। इस शोध में प्राथमिक विद्यालय (परिषदीय विद्यालय) के विद्यार्थियों तथा मदरसा के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।

- उर्दू मीडियम प्राथमिक विद्यालय हरदौली से 47 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया है।
- गोसिया मदरसा बबेरू से 53 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया।

3.3.3 उद्देश्य पूर्ण प्रति दर्शन

बांदा जनपद बबेरू क्षेत्र के विद्यालयों के चयन हेतु उद्देश्य पूर्ण प्रतिदर्शन विधि का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि इस चयन विधि में शोधार्थिनी उन विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रुप में सम्मिलित करती हैं, जिन्हें वह यह समझती हैं कि वह जीव संख्या का सही-सही प्रतिनिधित्व करता है।

इस संदर्भ में गिलफोर्ड महोदय ने उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन को परिभाषित करते हुए कहा है कि "उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श वह है जिसमें स्वेच्छा से चुना जाता है क्योंकि उसमें जीव संख्या के प्रतिनिधित्व होने का अच्छा सबूत मौजूद होता है।" इस तरह के प्रतिदर्शन को निर्णायक प्रति दर्शन भी कहा जाता है क्योंकि इसमें शोधकर्ता उन सदस्यों को चुनने का निर्णय स्वयं करते हैं जो एक निश्चित जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करके समझे जाते हैं इसके अंतर्गत समस्या से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित व्यक्तियों से ही संपर्क किया जाता है।

3.4 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधियां

किसी समस्या के अध्ययन हेतु परिकल्पना की रचना के पश्चात नवीन एवं अज्ञात प्रदत्त एकत्रित करने के लिए अनेक विधियां प्रयुक्त की जाती हैं प्रत्येक मापन विधि एक विशेष प्रकार के प्रदत्तों के संकलन का स्रोत होती है एक सफल अनुसंधान के लिए उपयुक्त उपकरणों के अध्ययन का अत्यधिक महत्व होता है इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शोधकर्ता भिन्न-भिन्न उपकरणों का प्रयोग करते हैं शोधकर्ता को इन उपकरणों की प्रकृति,गुण- दोषों एवं उनकी विश्वशनीयता एवं वैधता आदि से भली प्रकार से परिचित होना चाहिए ।प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के संग्रहण एवं विभिन्न चरो के मापन हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है जिसके द्वारा प्राप्त उत्तरों के आधार पर सांख्यिकी गणनाए की गई है।

- विद्यार्थियों में शैक्षिक स्तर के अध्ययन हेतु प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।
- विषय सजगता हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली प्रयोग की गई है, जिसके द्वारा विद्यार्थियों की विषय सजगता का मापन किया गया है।

- सुझाव निर्मित करने के लिए अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया।

3.4.1 भाषा प्रवीणता प्रश्नावली

शिक्षक का शिक्षण कार्य तभी माना जा सकता है, जब वह कक्षा में अपने ज्ञान को इस प्रकार प्रस्तुत करें जिससे छात्रों की जिज्ञासाए शांत करने के साथ उस ज्ञान की वर्तमान में उपयोगिता सिद्ध कर सकें। विशेष सजगता में यह महत्वपूर्ण पहलू है कि शिक्षक का अपने विषय में कौशल का स्तर क्या है जब शिक्षा छात्र केंद्रित नहीं होगी तब तक शिक्षक एकीकृत ज्ञान से पठन-पाठन में सुधार नहीं ला सकता है इसके साथ-साथ यह भी महत्वपूर्ण है कि छात्रों की योग्यता और वैयक्तिक विभिन्नता एवं व्यक्तिगत गुणों के आधार पर ही शिक्षक अपनी शिक्षण विधि की दिशा सुनिश्चित करें। छात्रों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप नवीन ज्ञान का सृजन करके उन तक पहुंचाया जा सकता है। इसके साथ-साथ विभिन्न स्तरों पर अपनी संपूर्ण दक्षता एवं कौशल का प्रयोग करके शिक्षण कौशल का विकास कर सकें।

3.4.2 भाषा प्रवीणता प्रश्नावली के उद्देश्य

इस प्रश्नावली के माध्यम से यह जानकारी प्राप्त की जा सकती है कि विद्यार्थी अपने भाषा विषय के प्रति कितने सजग हैं। तथा शिक्षकों के द्वारा भाषा शिक्षण का ज्ञान कितना दिया गया।

3.5 सांख्यिकीय विधियां

शोधार्थी द्वारा व्यक्त किए गए तथ्यों एवं उत्तरों का तब तक वैज्ञानिक अध्ययन नहीं किया जा सकता, जब तक उन्हें सांख्यिकी परीक्षण हेतु अंक में परिवर्तन न कर लिया जाए।

शोध अध्ययन में निर्धारित विद्यालयों के पश्चात भाषा प्रवीणता प्रश्नावली के आंकड़ों की गणना कर तालिका बनाई गई। परिकल्पना के परीक्षण के लिए एकत्रित किए गए आंकड़ों को तालिका बद्ध कर विश्लेषित करने हेतु विश्लेषण तकनीकी प्रयुक्त की जाती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में भी आंकड़ों के विश्लेषण के लिए उपयुक्त परिणाम ज्ञात करने हेतु विभिन्न सांख्यिकी विधियों C.R. Test तथा t-test table का उपयोग किया गया है जो कि अध्ययन उद्देश्यों के अनुरूप परिवर्तित हो गई।

शोध अध्ययन में न्यादर्शो के मध्य सार्थकता की जांच करने के लिए सार्थकता के दो स्तर 0.05 तथा 0.01 है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्शो के मध्य अंतर की सार्थकता की जांच के लिए सार्थकता का 0.05 स्तर प्रयोग किया गया है तथा सार्थक अंतर नहीं आने पर शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तों का सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या



" एक अनुसंधान प्ररचना आंकड़ों के संकलन तथा विश्लेषण के लिए उन दशाओं का प्रबन्ध करती है जो अनुसंधान के उद्देश्यों की संगतता को कार्य रीतियों में आर्थिक नियंत्रण के साथ सम्मिलित करने का उद्देश्य रखती है।"

....जहोदा, ड्यूश एवं कुंक

चतुर्थ अध्याय- पदों का विश्लेषण एवं निर्वचन

4.1 प्रस्तावना

साहित्य का अध्ययन करते समय हमारे समझ सांख्यिकी के संकेत संकल्पना एवं विचार आते हैं सांख्यिकी के अध्ययन से अपने निजी विचार बनाने या तथ्यों से निष्कर्ष निकालने में सहायता मिलती है। और उसे लेखक के निष्कर्षों को स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं होती। अध्यापक अपने छात्रों के व्यवहार और उपलब्धि स्तर की जांच के लिए अनेक परीक्षाएं लेते हैं और उपकरण प्रयोग करते हैं। साधारण सांख्यिकी विधियों से समको की व्याख्या और अधिक सार्थक हो जाती है यदि अध्यापक अनुसंधान कार्य को समझने में रुचि रखता है, तो उसे सांख्यिकी विधियों में अधिक दक्षता की आवश्यकता होती है।

4.2 प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में उर्दू भाषाप्रवीणता का प्रश्नशः अध्ययन।

4.2.1 आवश्यक प्रविष्टियों के संदर्भ प्राथमिक विद्यार्थियों की स्थिति।

4.2.1.1 अपना नाम उर्दू में लिखिए।

तालिका संख्या –4-1

उर्दू में नाम लिखने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	5	71.42%
	छात्र	46	42	91.30%
	योग	53	47	88.67%
परिषदीय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%

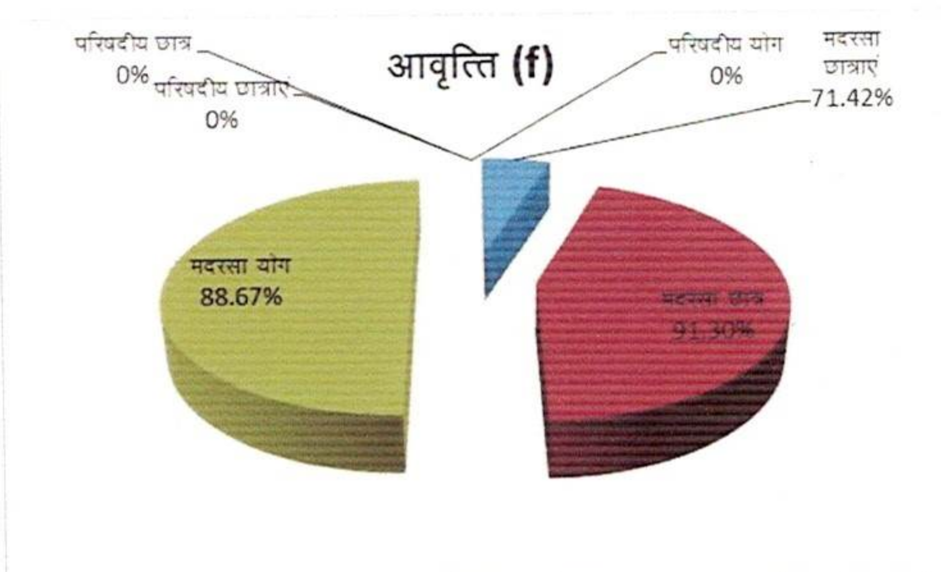
4.2 प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में उर्दू भाषा प्रवीणता का प्रश्नशः अध्ययन।

4.2.1 आवश्यक प्रविष्टियों के संदर्भ प्राथमिक विद्यार्थियों की स्थिति।

4.2.1.1 अपना नाम उर्दू में लिखिए।

तालिका संख्या **4.1**
उर्दू में नाम लिखने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या **(N)**	आवृत्ति **(f)**	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	5	71.42%
	छात्र	46	42	91.30%
	योग	**53**	**47**	88.67%
परिषदीय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या **4.1**
उर्दू में नाम लिखने के संबंध में

विश्लेषण. उक्त तालिका संख्या 4.1 एवं चित्र संख्या 4.1 से स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राएं 71.42% उर्दू में अपना नाम नहीं लिख पातीं जबकि अधिकांश छात्र 91.30% उर्दू में अपना नाम लिख लेते हैं। उर्दू माध्यम के परिषदीय विद्यालय का कोई भी विद्यार्थी अपना नाम नहीं लिख पाया।

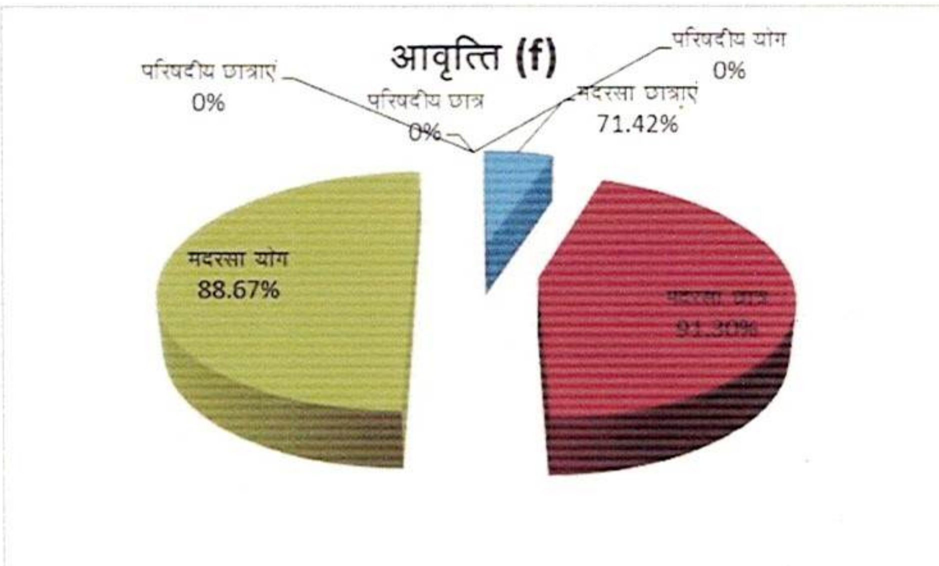
विवेचना. भाषा शिक्षण में सर्वप्रथम अपना नाम लिखना सिखाया जाता है। यह आश्चर्य का विषय है कि मदरसा के 91.30% छात्र अपना नाम लिख लेते हैं वहीं 71.42% छात्राएं ही अपना नाम लिख पाती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि लैंगिक भेदभाव के कारण छात्राओं पर कम ध्यान दिया जाता है।

4.2.1.2 अपनी कक्षा लिखिए।

तालिका संख्या **4.2**

उर्दू में अपनी कक्षा लिखने के संदर्भ में प्राथमिक विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	5	71.42%
	छात्र	46	42	91.30%
	योग	**53**	**47**	88.67%
परिषदीय विद्यालय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या **4.2**

उर्दू में कक्षा लिखने के संबंध में

विश्लेषण. उक्त तालिका संख्या **4.2** एवं चित्र संख्या **4.2** से स्पष्ट है कि 71.42% छात्राएं अपनी कक्षा उर्दू भाषा में लिख पाती हैं जबकि 91.30% छात्र उर्दू भाषा में अपनी कक्षा लिख लेते हैं।

विवेचना. उपरोक्त आंकडों से स्पष्ट होता है कि छात्राएं 71.42% तथा छात्र 91.30% अपनी कक्षा लिख सकते हैं। इससे यह प्रतीत होता है कि छात्राओं को उर्दू गिनती का ज्ञान कम है।

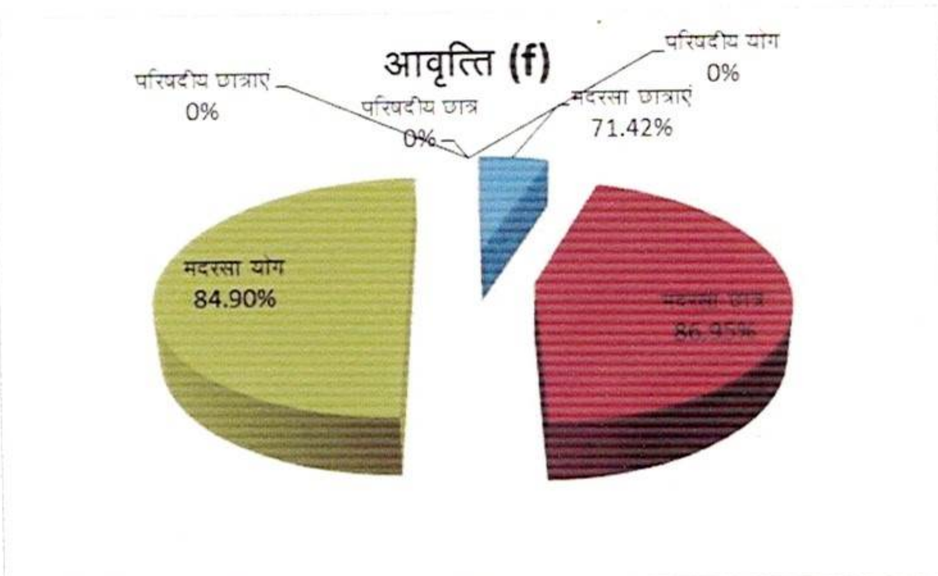
4.4.2 खण्ड (क) अन्य विवरण के संबंध में प्राथमिक विद्यार्थियों की स्थिति।

4.2.2.1 पिता का नाम उर्दू में लिखिए।

तालिका संख्या **4.3**

उर्दू में पिता का नाम लिखने के संदर्भ में प्राथमिक विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या **(N)**	आवृत्ति **(f)**	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	5	71.42%
	छात्र	46	40	86.95%
	योग	**53**	**45**	84.90%
परिषदीय विद्यालय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या **4.3**

पिता का नाम उर्दू में लिखने के संबंध में

विश्लेषण. उक्त तालिका संख्या **4.3** एवं चित्र संख्या **4.3** से यह स्पष्ट है कि मदरसा की 71.42% छात्राएं ही अपने पिता का नाम उर्दू भाषा में लिख पाती हैं तथा 86.95% छात्र पिता का नाम उर्दू में लिख पाते हैं।

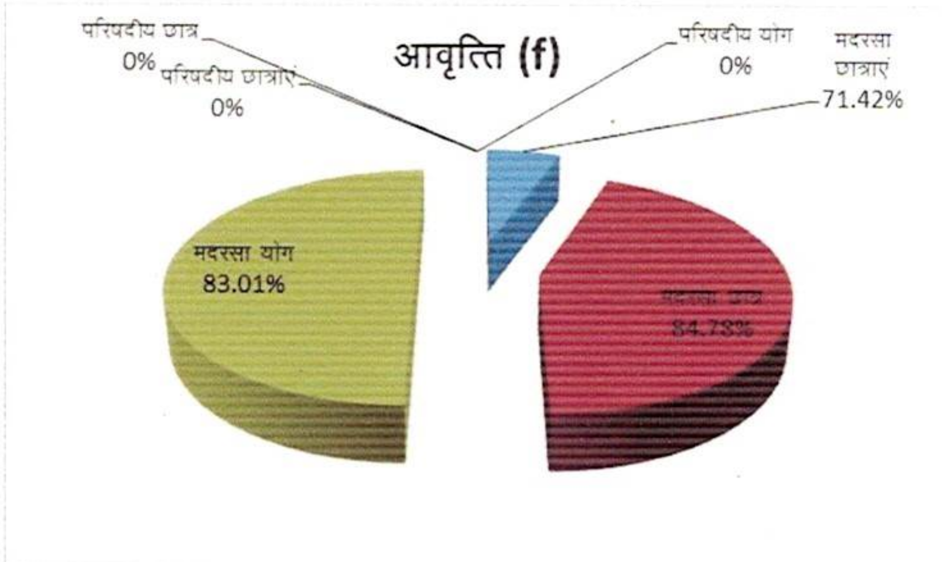
विवेचना. उपरोक्त तालिका के परिणामों से स्पष्ट होता है कि 71.42% छात्राएं ही उर्दू भाषा में उत्तर पायी जबकि 86.95% छात्रों ने जवाब दिया। इससे यह प्रतीत होता है कि हाफिजों के द्वारा मदरसा के शैक्षिक स्तर पर ध्यान नहीं दिया जाता है। वहीं परिषदीय विद्यालय का स्तर शून्य है। अतः आवश्यक है कि सरकार को ऐसे विद्यालय बन्द कर देने चाहिये।

4.2.2.2 **खेल** का नाम उर्दू में लिखिए।

तालिका संख्या **4.4**

पसंदीदा खेल का नाम उर्दू भाषा में लिखने के संदर्भ में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या **(N)**	आवृत्ति **(f)**	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	5	71.42%
	छात्र	46	39	84.78%
	योग	**53**	**44**	83.01%
परिषदीय विद्यालय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या– **4.4**

पसंदीदा खेल का नाम उर्दू में लिखने के संबंध में

विश्लेषण. उक्त तालिका संख्या **4.4** एवं चित्र संख्या **4.4** से यह स्पष्ट है कि 71.42% छात्राएं अपने खेल का नाम उर्दू भाषा में लिख पायी जबकि 84.78% छात्रों ने अपने खेल का नाम लिख लिया।

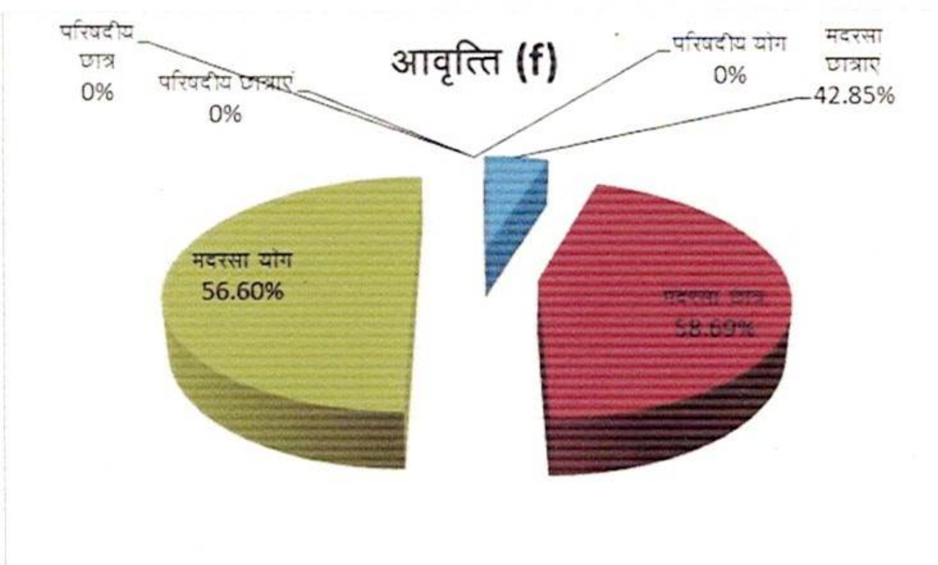
विवेचना. उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि 71.42% छात्राएं उर्दू भाषा में खेल का नाम लिख पायी जबकि छात्रों में 84.78% का प्रदर्शन रहा है। इससे यह प्रतीत होता है कि छात्राएं नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित नहीं रहती हैं।

4.2.2.3 अपना पता उर्दू में लिखिए।

तालिका संख्या 4.5

उर्दू भाषा में अपना पता लिखने के संदर्भ में प्राथमिक विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	03	42.85%
	छात्र	46	27	58.69%
	योग	**53**	**30**	56.60%
परिषदीय विद्यालय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या 4.5

उर्दू भाषा में **अपना पता** लिखने के संबंध में

विश्लेषण. उक्त तालिका संख्या 4.5 एवं चित्र संख्या 4.5 से यह स्पष्ट है कि 42.85% छात्राएं अपना पता उर्दू भाषा में लिख पायी जबकि 58.69% छात्रों का स्तर रहा।

विवेचना. उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि भाषा शिक्षण का ज्ञान छात्र.छात्राओं को कम कराया जाता है तथा धार्मिक शिक्षा का अधिक। छात्र.छात्राओं को कुरान की आयतों का ज्ञान तो है पर वह अपना नाम उर्दू में नहीं लिख सकते।

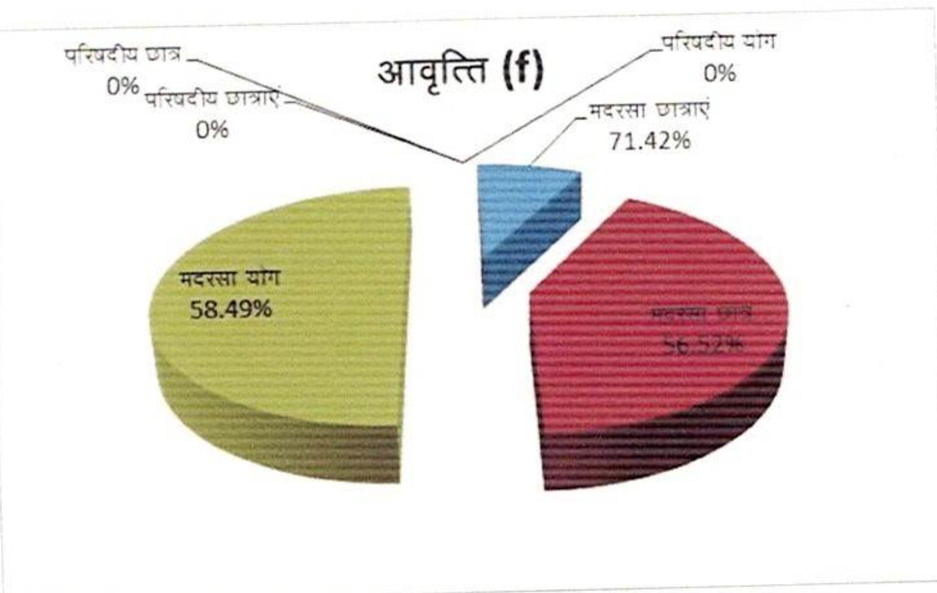
4.4.3 खण्ड (ब) वर्तनी के संबंध में प्राथमिक विद्यार्थियों की स्थिति।

4.4.3.1 अक्सर को शुद्ध वर्तनी में लिखिए।

तालिका संख्या **4.5**

अक्सर को शुद्ध वर्तनी में लिख पाने के संदर्भ में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	05	71.42%
	छात्र	46	26	56.52%
	योग	**53**	**31**	58.49%
परिषदीय विद्यालय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या **4.5**

विश्लेषण. तालिका संख्या **4.5** एवं चित्र संख्या **4.5** से यह स्पष्ट है कि 71.42% छात्राओं ने वर्तनी में सही उत्तर दिया तथा इसमें छात्रों ने सिर्फ 56.52% ही शुद्ध वर्तनी प्रस्तुत की।

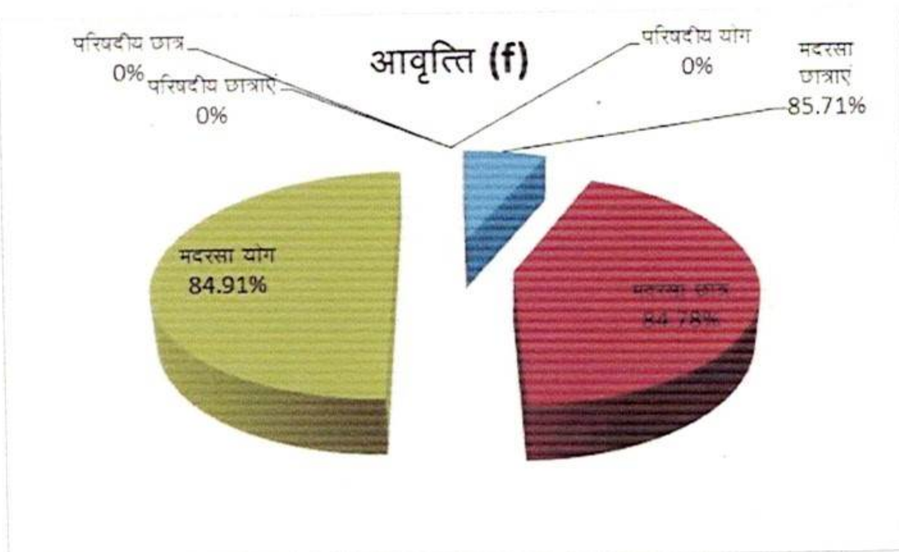
विवेचना. उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर यह पाया गया कि उर्दू में छात्रों की अपेक्षा छात्राएं वर्तनी सुधार में आगे हैं। अतः प्रतीत होता है कि छात्रों के द्वारा वर्तनी में ध्यान कम दिया जाता है।

4.4.3.2 रोजा शब्द को शुद्ध वर्तनी में लिखिए।

तालिका संख्या **4.6**

रोजा को उर्दू भाषा में शुद्ध वर्तनी में लिख पाने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या **(N)**	आवृत्ति **(f)**	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	07	06	85.71%
	छात्र	46	39	84.78%
	योग	**53**	**45**	84.91%
परिषदीय विद्यालय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या **4.6**

रोजा को **शुद्ध वर्तनी** में लिखने के संबंध में

विश्लेषण. तालिका संख्या **4.6** एवं चित्र संख्या **4.6** में यह स्पष्ट होता है कि 85.71% छात्राएं उर्दू वर्तनी में सही उत्तर दे सकींए वहीं 84.78% छात्रों के द्वारा वर्तनी शुद्ध की गयी।

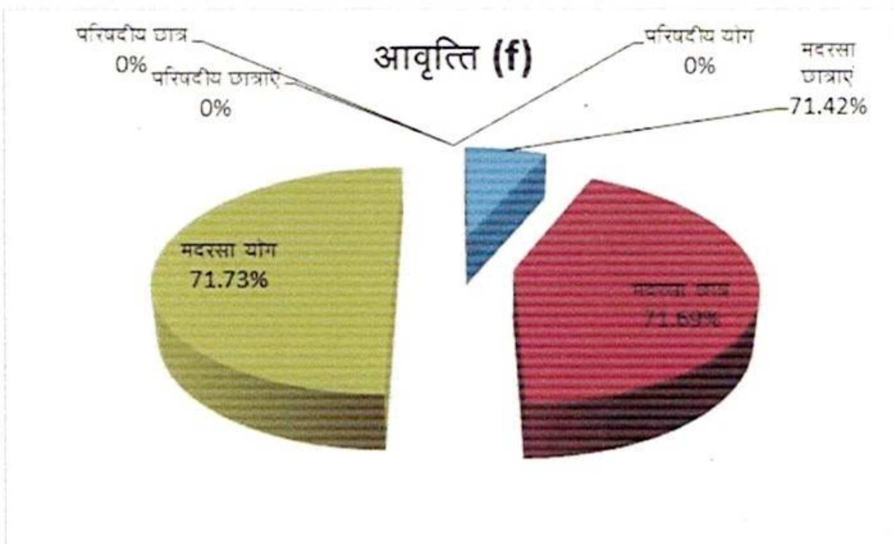
विवेचना. उपरोक्त आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि छात्रों के द्वारा वर्तनी सुधार में ध्यान कम दिया जाता है तथा शिक्षक भी इस विषय पर कम ध्यान देते हैं।

4.4.3.4 शरद को शुद्ध वर्तनी में लिखिए।

तालिका संख्या **4.8**

शरद को उर्दू में शुद्ध वर्तनी में लिख पाने के संदर्भ में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या **(N)**	आवृत्ति **(f)**	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	05	71.42%
	छात्र	46	33	71.73%
	योग	**53**	**38**	71.69%
परिषदीय विद्यालय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या **4.8**

शरद को उर्दू भाषा में लिखने के संबंध में

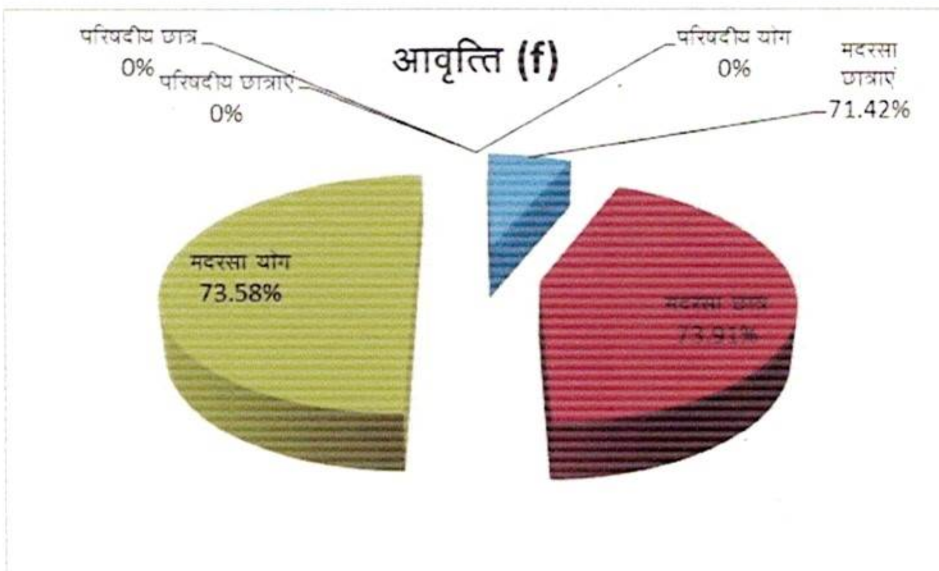
विश्लेषण. उक्त तालिका संख्या **4.8** एवं चित्र संख्या **4.8** में उर्दू भाषा की वर्तनी को शुद्ध करने में छात्राएं 71.42% तथा छात्र 71.73% प्रदर्शन प्रस्तुत किये।

विवेचना. उपरोक्त आंकड़ों से यह ज्ञात होता है कि यहाँ छात्र.छात्राओं का प्रतिशत सामान्य हैए परन्तु भाषा जन्य त्रुटियां आगे भी पाई गईं। इससे यह प्रतीत होता है कि छात्रों में भाषा जन्य वाचन अशुद्धि है।

4.4.3.5 सितारा को शुद्ध वर्तनी में लिखिए।

तालिका संख्या **4.9**
सितारा को उर्दू में शुद्ध वर्तनी में लिख पाने के संदर्भ में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या **(N)**	आवृत्ति **(f)**	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	05	71.42%
	छात्र	46	34	73.91%
	योग	**53**	**39**	73.58%
परिषदीय विद्यालय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या **4.9**
सितारा को उर्दू भाषा में लिखने के संबंध में

विश्लेषण. तालिका संख्या **4.9** एवं चित्र संख्या **4.9** से यह ज्ञात होता है कि छात्राओं ने 71.42% सही उत्तर दिया तथा छात्रों ने 73.91% सही उत्तर दिया।

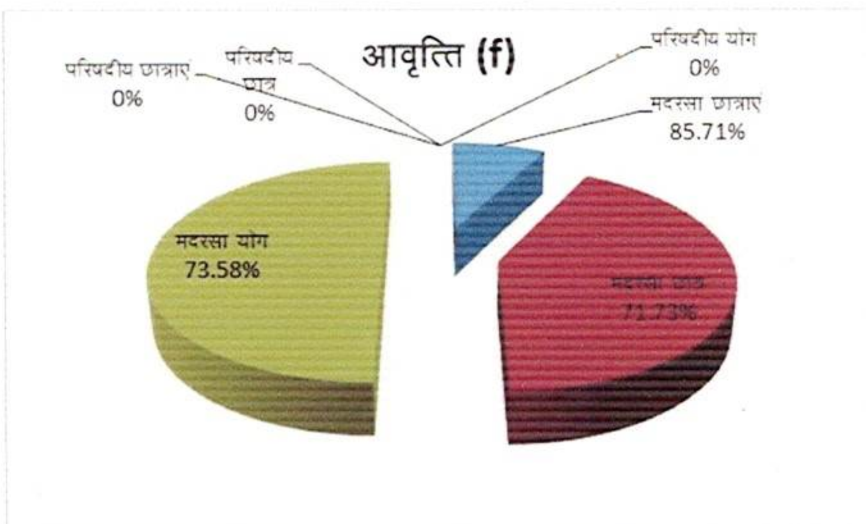
विवेचना. उपरोक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि छात्र छात्राएं नियमित अपनी कक्षा में उपस्थित नहीं रहते हैं तथा अपनी भाषा में रूचि नहीं लेते।

4.4.3.7 ह+ज+र+त शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखिए।

तालिका संख्या **4.10**

हज़रत शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखने में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	07	06	85.71%
	छात्र	46	33	71.73%
	योग	**53**	**39**	73.58%
परिषदीय विद्यालय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या **4.10**

ह+ज+र+त शब्द को उर्दू भाषा में **मिलाकर** लिखने के संबंध में

विश्लेषण. तालिका संख्या **4.10** एवं चित्र संख्या **4.10** के 85.71% छात्रायें उर्दू भाषा में शब्दों को मिलाकर लिख सकी तथा 71.73% छात्र उर्दू भाषा के शब्द मिलाकर लिख सके।

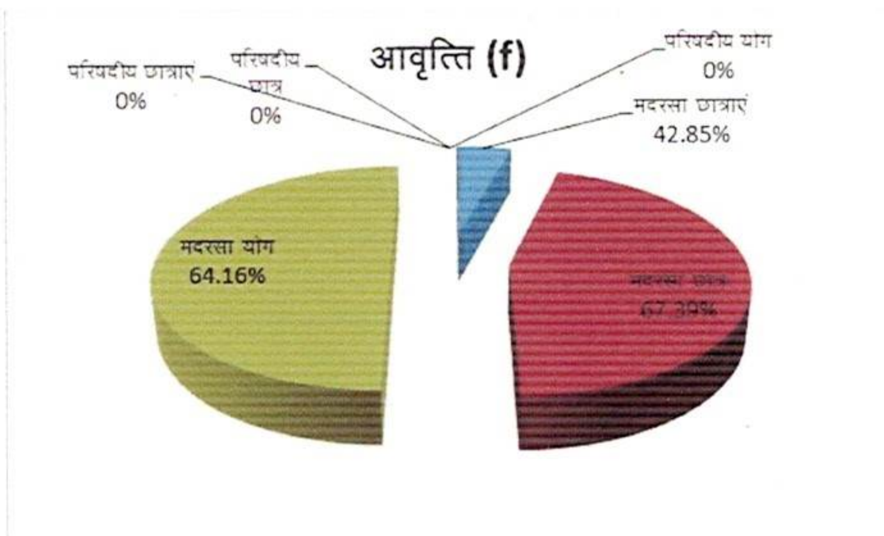
विवेचना. उपरोक्त आंकड़ों से यह ज्ञात होता है कि मदरसा छात्र.छात्राओं की स्थिति संतोषजनक नहीं है तथा इससे यह प्रतीत होता है कि हाफिज तथा मौलवी इस विषय पर विशेष ध्यान नहीं देते हैं।

4.4.3.7 श+र+ब+त शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखिए।

तालिका संख्या **4.11**

श़रब़त को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखने में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या **(N)**	आवृत्ति **(f)**	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	07	03	42.85%
	छात्र	46	31	67.39%
	योग	**53**	**34**	64.16%
परिषदीय विद्यालय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या **4.11**

श+र+ब+त शब्द को उर्दू भाषा में **मिलाकर** लिखने के संबंध में

विश्लेषण. उक्त तालिका संख्या **4.11** एवं चित्र संख्या **4.11** से यह स्पष्ट होता है कि सही उत्तर देने वाली छात्राएं 42.85% हैं जबकि सही उत्तर देने वाले छात्र 67.39% हैं।

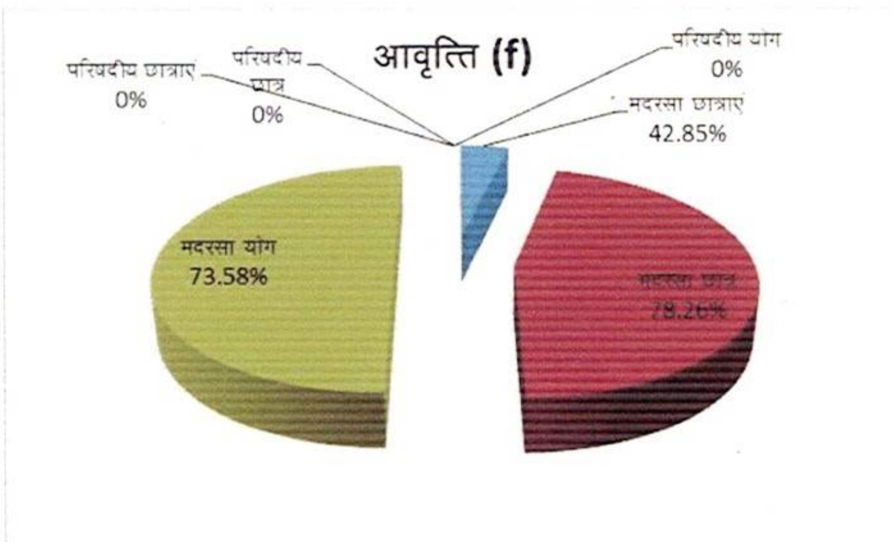
विवेचना. उक्त आंकड़ों से यह ज्ञात होता है कि छात्र.छात्राओं द्वारा भाषा विषय में लापरवाही की जाती है तथा मदरसा में इस विषय पर ध्यान नहीं दिया जाता है।

4.4.3.8 ब+त+ख शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखिए।

तालिका संख्या **4.12**

बत़ख शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	07	03	42.85%
	छात्र	46	36	78.26%
	योग	**53**	**39**	73.58%
परिषदीय विद्यालय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या **4.12**

ब+त+ख शब्द को उर्दू भाषा में **मिलाकर** लिखने के संबंध में

विश्लेषण. उक्त तालिका संख्या **4.12** एवं चित्र संख्या **4.12** से यह स्पष्ट होता है कि छात्राओं के द्वारा दिये गये सही उत्तर का 42.85% ही प्राप्त हुआ जबकि छात्रों के द्वारा 78.26% प्रतिशत उत्तर दिया गया।

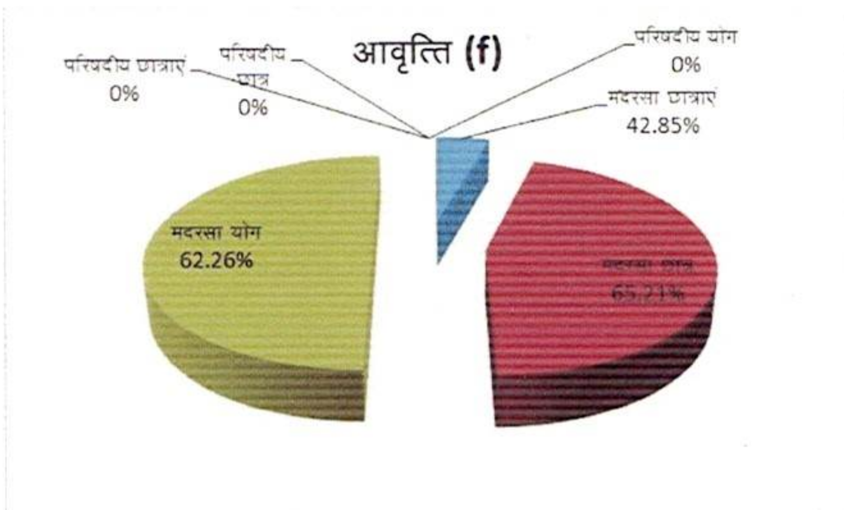
विवेचना. उक्त आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि छात्र.छात्राओं में भाषा संबंधी ज्ञान कम है तथा ऐसा सन्देह है कि मदरसा बोर्ड भी इस विषय पर ध्यान नहीं देता है।

4.4.3.9 ज+फ+र शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखिए।

तालिका संख्या **4.13**

ज़फ़र शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	07	03	42.85%
	छात्र	46	30	65.21%
	योग	**53**	**33**	62.26%
परिषदीय विद्यालय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या **4.13**

ज+फ+र शब्द को उर्दू भाषा में **मिलाकर** लिखने के संबंध में

विश्लेषण. उक्त तालिका संख्या **4.13** एवं चित्र संख्या **4.13** से यह स्पष्ट होता है कि छात्रायें सिर्फ 42.85% ही सही उत्तर देकर इस प्रश्न के प्रति जागरूक हैं तथा छात्र 65.21% जवाब देकर इस प्रश्न के प्रति जागरूक हैं।

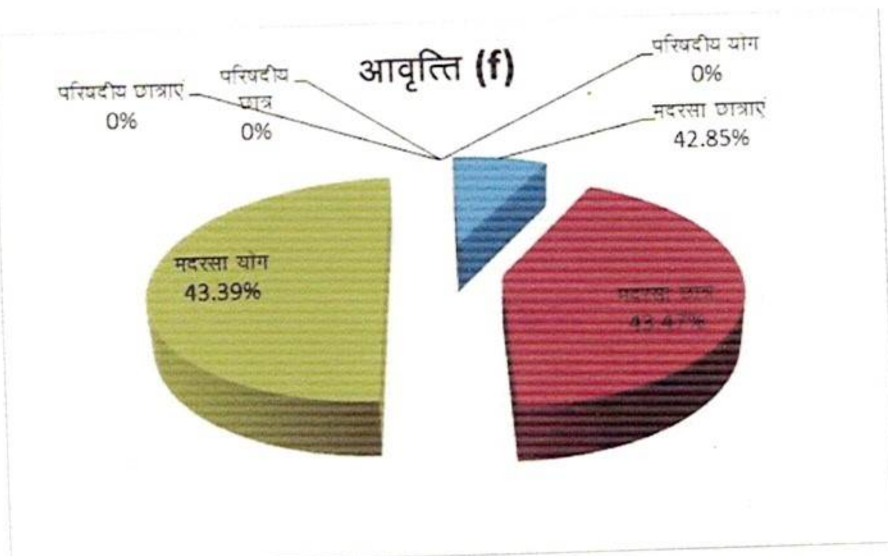
विवेचना. उक्त आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि छात्र.छात्राएं उर्दू शब्द मिलान में कमजोर हैं। हाफिज के अलावा माता.पिता भी विद्यार्थियों के शिक्षण कार्य में रूचि नहीं दिखाते हैं।

4.4.3.9 स+र+प+ट शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखिए।

तालिका संख्या **4.14**

सरपट शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखने में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	07	03	42.85%
	छात्र	46	20	43.47%
	योग	**53**	**23**	43.39%
परिषदीय विद्यालय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या **4.14**

स+र+प+ट शब्द को उर्दू भाषा में **मिलाकर** लिखने के संबंध में

विश्लेषण. तालिका संख्या **4.14** एवं चित्र संख्या **4.14** से स्पष्ट होता है कि छात्रायें इस प्रश्न के प्रति 42.85% जागरूक कम तथा छात्र भी आंकड़ों के आधार पर 43.47% ही जागरूक हैं।

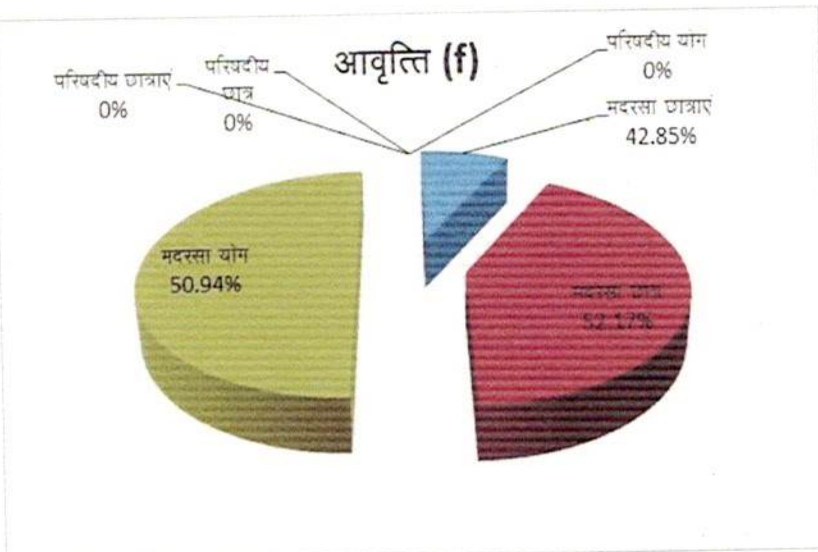
विवेचना. उक्त आंकड़ों के आधार पर ज्ञात होता है कि इस प्रश्न के प्रति छात्र. छात्राएं दोनों ही सामान्य रूप से मिले। लेकिन यह अन्तर भी मदरसा के मौलवियों द्वारा न ध्यान देने के कारण आया।

4.4.3.10 अ+म+न शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखिये।

तालिका संख्या: **4.15**

अ+म+न शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	03	42.85%
	छात्र	46	24	52.17%
	योग	**53**	**27**	50.94%
परिषदीय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या: **4.15**

अ+म+न शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखने के संबंध में

विश्लेषण- उक्त तालिका संख्या **4.15** एवं चित्र संख्या **4.15** से स्पष्ट होता है कि छात्राये सिर्फ 42.85% ही उर्दू में शब्द मिलाकर ही लिख पाती हैं जबकी छात्र 52.17% उर्दू में शब्द मिलाकर लिख लेते हैं।

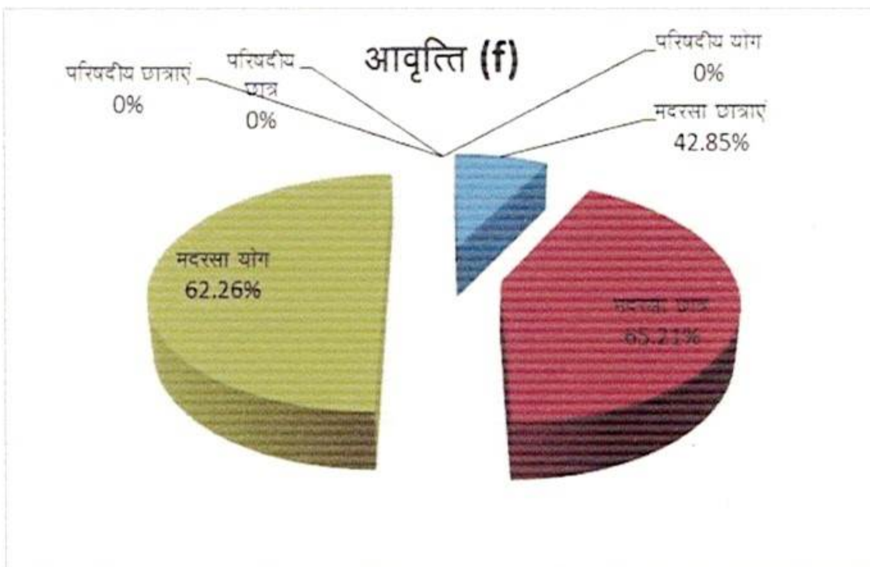
विवेचना- उपरोक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि छात्र एवम छात्राएं अपनी कक्षा में बहुत कम उपस्थित रहते हैं तथा उर्दू भाषा में मिलाकर लिख पाने में ज्यादा रूचि नहीं लेते हैं।

4.4.3.11 च+म+न शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखिये।

तालिका संख्या: **4.16**

च+म+न शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	03	42.85%
	छात्र	46	30	65.21%
	योग	**53**	**33**	62.26%
परिषदीय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या: **4.16**

च+म+न शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखने के संबंध में

विश्लेषण- उक्त तालिका संख्या **4.16** एवं चित्र संख्या **4.16** से स्पष्ट होता है कि छात्राओं ने सिर्फ 42.85% ही सही उत्तर दिया जबकि छात्रों द्वारा 65.21% सही उत्तर दिया है।

विवेचना- उपरोक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि छात्राएं अपनी कक्षा में बहुत ही कम उपस्थित रहती हैं तथा छात्र भी अपनी भाषा में बहुत ज्यादा रूचि नहीं लेते हैं।

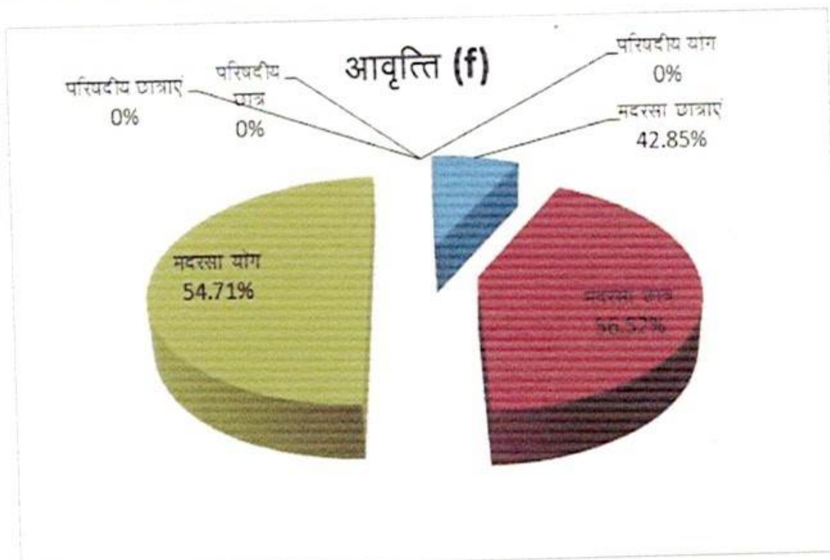
4.4.4 खण्ड (ग) हिन्दी से उर्दू बनाने के संबंध में प्राथमिक विद्यार्थियों की स्थिति।

4.4.4.1 शहजादा शब्द को उर्दू भाषा में लिखिये।

तालिका संख्या: **4.17**

शहजादा शब्द को उर्दू भाषा में लिखने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	03	42.85%
	छात्र	46	26	56.52%
	योग	**53**	**29**	54.71%
परिषदीय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या: **4.17**

शहजादा शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखने के संबंध में

विश्लेषण- उक्त तालिका संख्या **4.17** एवं चित्र संख्या **4.17** से स्पष्ट होता है कि छात्राओं ने 42.85% सही उत्तर दिया जबकि छात्रों द्वारा 56.52% सही उत्तर दिया है।

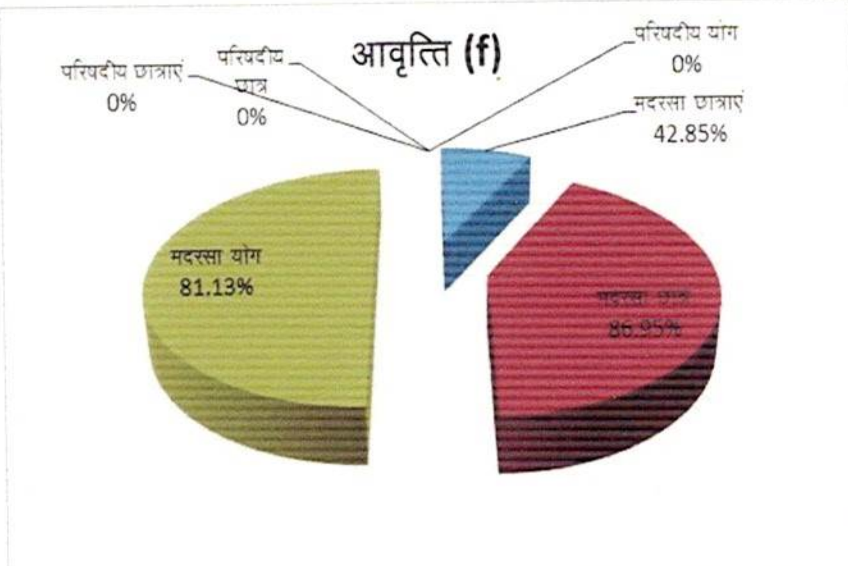
विवेचना- उपरोक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि छात्राएं अपनी कक्षा में बहुत ही कम उपस्थित रहती हैं तथा छात्र अपनी भाषा में बहुत ज्यादा रूचि नहीं लेते हैं।

4.4.4.2 रमजान शब्द को उर्दू भाषा में लिखिये।

तालिका संख्या: **4.19**

रमजान शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	03	42.85%
	छात्र	46	40	86.95%
	योग	**53**	**43**	81.13%
परिषदीय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या: **4.19**

रमजान शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखने के संबंध में

विश्लेषण- उक्त तालिका संख्या **4.19** एवं चित्र संख्या **4.19** से स्पष्ट होता है कि छात्राओं ने सिर्फ 42.85% ही सही उत्तर दे पाई जबकि छात्रों द्वारा 86.95% सही उत्तर दिया है।

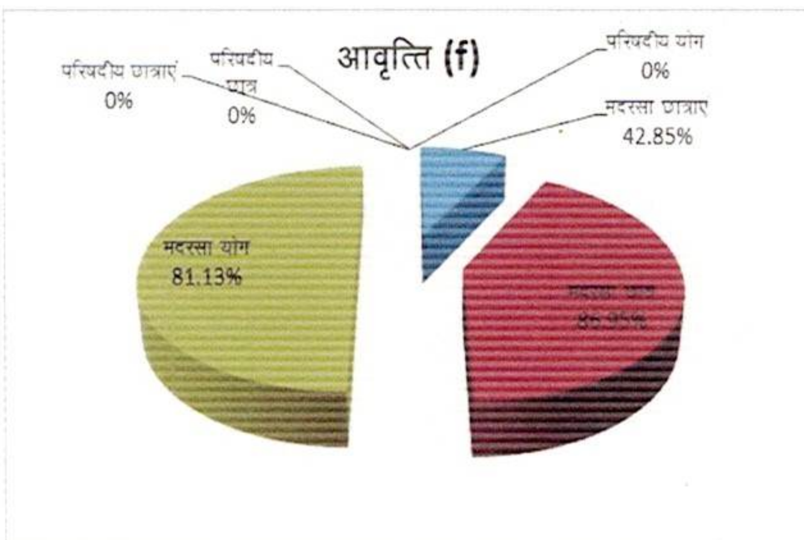
विवेचना- उपरोक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि छात्राएं अपनी कक्षा में बहुत ही कम उपस्थित रहती हैं तथा छात्र अपनी भाषा में बहुत ज्यादा रूचि लेते हैं।

4.4.4.3 रुखशत शब्द को उर्दू भाषा में लिखिये।

तालिका संख्या: **4.18**

रुखशत शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	**श्रेणी**	**संख्या (N)**	**आवृत्ति (f)**	**प्रतिशत**
मदरसा	छात्राएं	7	03	42.85%
	छात्र	46	40	86.95%
	योग	**53**	**43**	81.13%
परिषदीय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या: **4.18**

रुखशत शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखने के संबंध में

विश्लेषण- उक्त तालिका संख्या **4.18** एवं चित्र संख्या **4.18** से स्पष्ट होता है कि छात्राओं ने सिर्फ 42.85% ही सही उत्तर दे पाई जबकि छात्रों द्वारा 86.95% सही उत्तर दिया है।

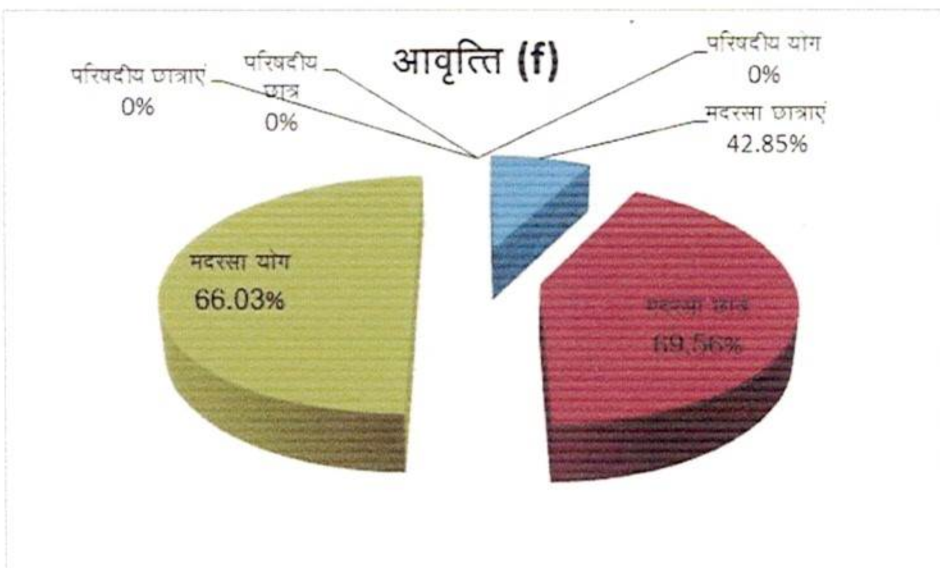
विवेचना- उपरोक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि छात्राएं अपनी कक्षा में बहुत ही कम उपस्थित रहती हैं तथा छात्र अपनी भाषा में बहुत ज्यादा रूचि लेते हैं।

4.4.4.4 खैरात शब्द को उर्दू भाषा में लिखिए।

तालिका संख्या: **4.19**

खैरात शब्द को उर्दू भाषा में लिखने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	03	42.85%
	छात्र	46	32	69.56%
	योग	**53**	**35**	66.03%
परिषदीय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या: **4.19**

खैरात शब्द को उर्दू भाषा में लिखने के संबंध में

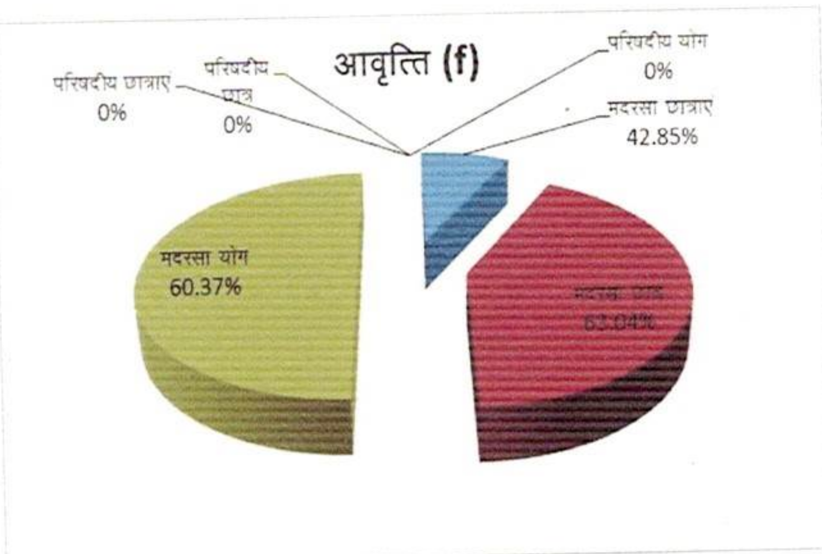
विश्लेषण- उक्त तालिका संख्या **4.19** एवं चित्र संख्या **4.19** से स्पष्ट होता है कि छात्राओं ने 42.85% तथा छात्रों के द्वारा 69.56% सही उत्तर दिया गया।

4.4.4.5 मीनार शब्द को उर्दू भाषा में लिखिये।

तालिका संख्या: **4.20**

मीनार शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	03	42.85%
	छात्र	46	29	63.04%
	योग	**53**	**32**	60.37%
परिषदीय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या: **4.20**

मीनार शब्द को उर्दू भाषा में मिलाकर लिखने के संबंध में

विश्लेषण- उक्त तालिका संख्या **4.20** एवं चित्र संख्या **4.20** से स्पष्ट होता है कि छात्राओं ने 42.85% सही उत्तर दे पाई जबकि छात्रों द्वारा 63.04% सही उत्तर दिया है।

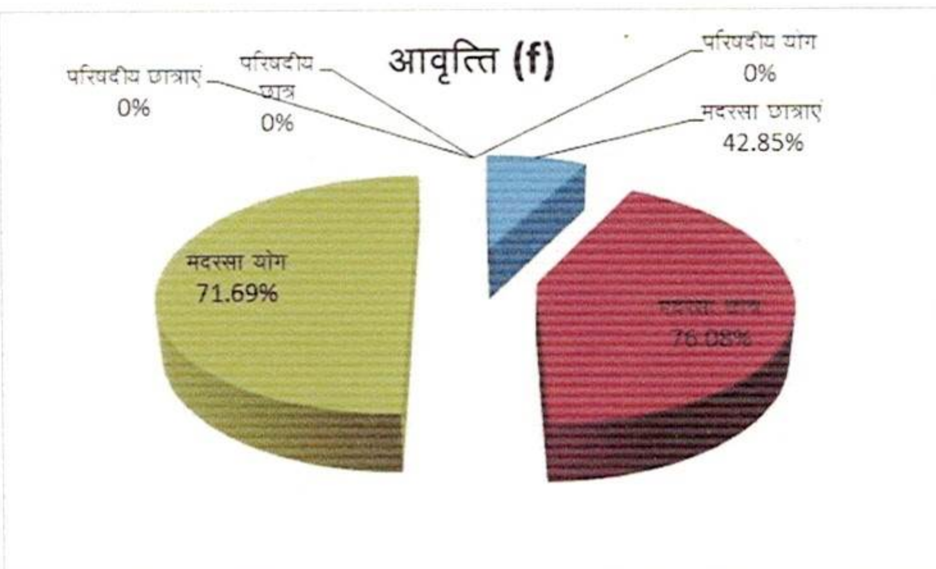
विवेचना- उपरोक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि छात्राएं अपनी कक्षा में बहुत ही कम उपस्थित रहती हैं तथा छात्र अपनी भाषा में बहुत ज्यादा रूचि नहीं लेते हैं।

4.4.4.6 बुलबुल शब्द को उर्दू से हिन्दी बनाइये।

तालिका संख्या **4.21**

बुलबुल शब्द को हिन्दी भाषा में लिखने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	03	42.85%
	छात्र	46	35	76.08%
	योग	**53**	**48**	71.69%
परिषदीय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या: **4.21**

बुलबुल शब्द को हिन्दी भाषा में लिखने के संबंध में

विश्लेषण- उक्त तालिका संख्या **4.21** एवं चित्र संख्या **4.21** से स्पष्ट होता है कि छात्राओं ने 42.85% ही सही उत्तर दिया जबकि छात्रों ने 76.08% सही उत्तर दिया।

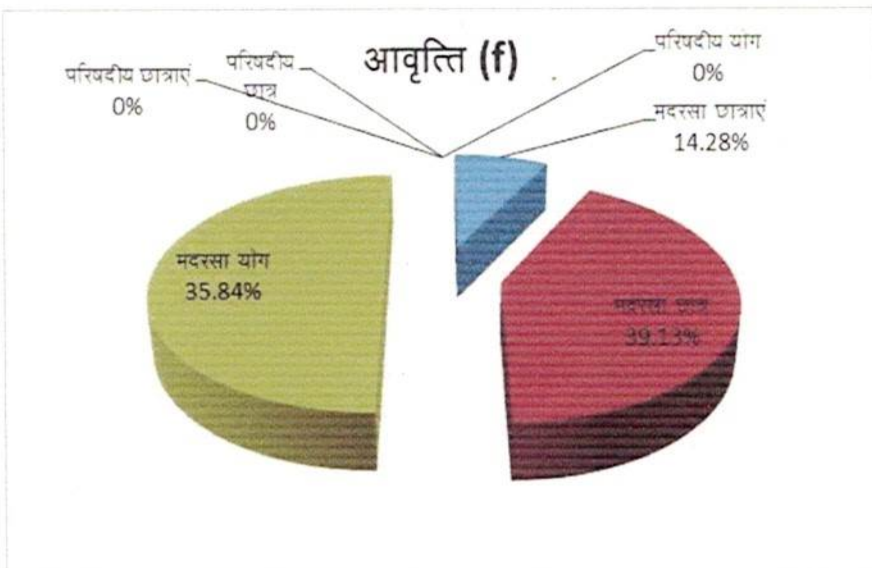
विवेचना- उपरोक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि छात्र-छात्राएं नियमित अपनी कक्षा में उपस्थित नहीं रहते हैं तथा अपनी भाषा में रूचि नहीं लेते।

4.4.4.7 हैदराबाद शब्द को उर्दू से हिन्दी बनाइये।

तालिका संख्या: **4.22**

हैदराबाद शब्द को हिन्दी भाषा में लिखने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	01	14.28%
	छात्र	46	18	39.13%
	योग	**53**	**19**	35.84%
परिषदीय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या: **4.22**

हैदराबाद शब्द को हिन्दी भाषा में लिखने के संबंध में

विश्लेषण- उक्त तालिका संख्या **4.22** एवं चित्र संख्या **4.22** से स्पष्ट होता है कि छात्राओं ने सिर्फ14.28% ही सही उत्तर दिया जबकि छात्रों द्वारा 39.13% सही उत्तर दिया है।

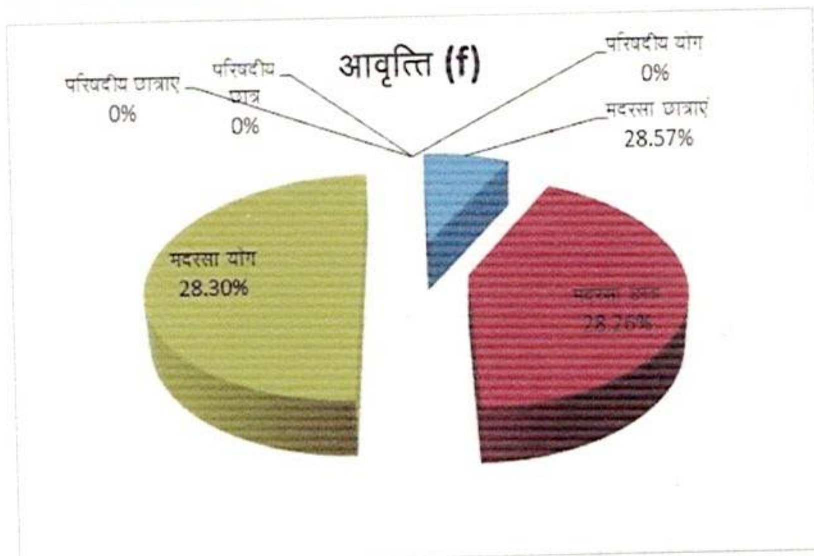
विवेचना- उपरोक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि छात्राएं अपनी कक्षा में बहुत ही कम उपस्थित रहती हैं तथा छात्र भी अपनी भाषा में बहुत ज्यादा रूचि नहीं लेते हैं।

4.4.4.8 हिन्दुस्तान को हिन्दी भाषा में लिखिये।

तालिका संख्या: **4.23**

हिन्दुस्तान को हिन्दी भाषा में लिखने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	02	28.57%
	छात्र	46	13	28.26%
	योग	**53**	**15**	28.30%
परिषदीय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या: **4.23**

हिन्दुस्तान को हिन्दी भाषा में लिखने के संबंध में

विश्लेषण- उक्त तालिका संख्या **4.23** एवं चित्र संख्या **4.23** से स्पष्ट होता है कि सिर्फ 28.57% छात्राये ही हिन्दी भाषा में सही उत्तर दे पाई तथा 28.26% छात्रों द्वारा सही उत्तर दिया है।

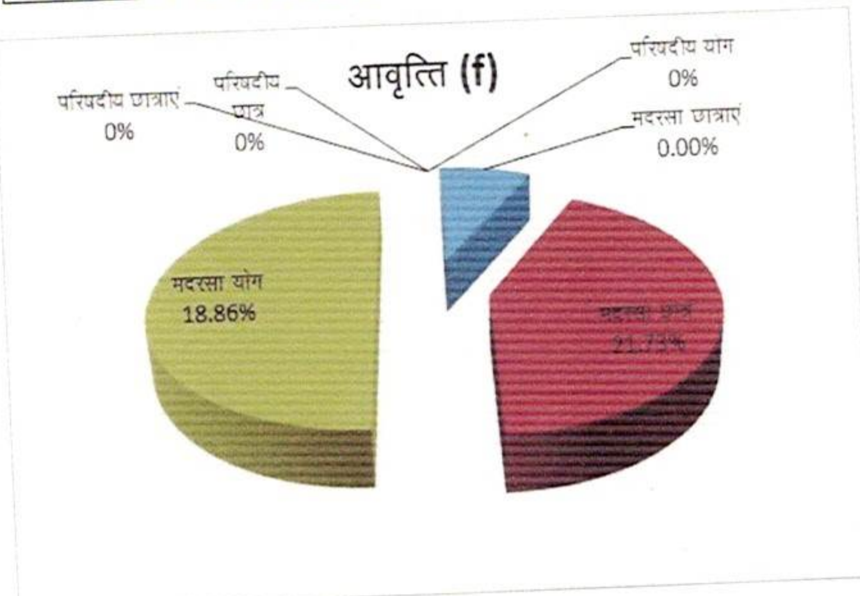
विवेचना- उपरोक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि छात्र एवम छात्राएं अपनी कक्षा में बहुत ही कम उपस्थित रहते हैं तथा भाषा में बहुत ज्यादा रूचि नहीं लेते हैं।

4.4.4.9 औरत को हिन्दी भाषा में लिखिये।

तालिका संख्या: **4.24**

औरत को हिन्दी भाषा में लिखने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	0	0.00%
	छात्र	46	10	21.73%
	योग	**53**	**10**	18.86%
परिषदीय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या: **4.24**

औरत को हिन्दी भाषा में मिलाकर लिखने के संबंध में

विश्लेषण- उक्त तालिका संख्या **4.24** एवं चित्र संख्या **4.24** से स्पष्ट होता है कि 0.00% छात्राये भी हिन्दी में शब्द नहीं लिख पाती हैं जबकी 21.73% छात्र हिन्दी में शब्द लिख पाये।

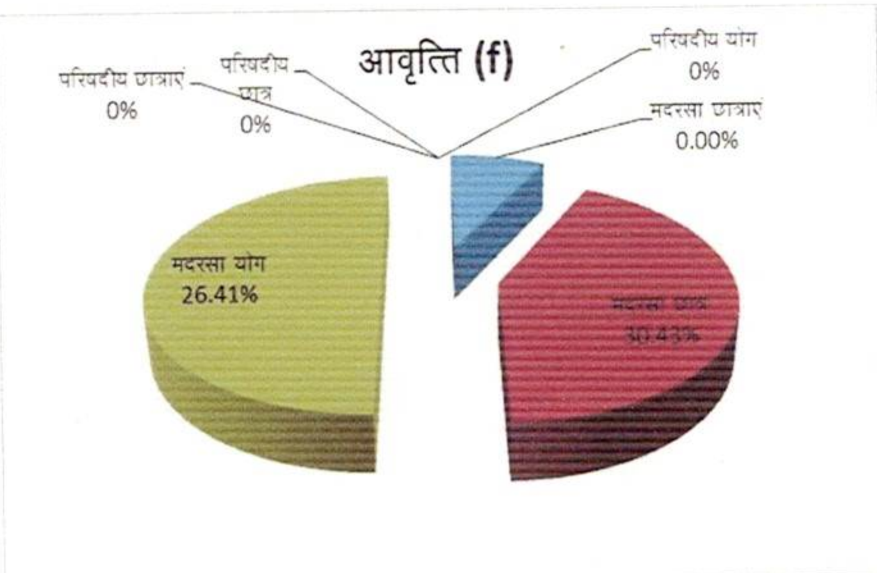
विवेचना- उपरोक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि छात्राओं को हिन्दी की बिल्कुल भी जानकारी नहीं हैं तथा छात्रों द्वारा भी हिन्दी के बारे में विशेष रूचि नहीं रखते हैं।

4.4.4.10 आदमी शब्द को हिन्दी भाषा में लिखिये।

तालिका संख्या: **4.25**

आदमी शब्द को हिन्दी भाषा में लिखने के संबंध में विद्यार्थियों की स्थिति

विद्यालय	श्रेणी	संख्या (N)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत
मदरसा	छात्राएं	7	0	0.00%
	छात्र	46	14	30.43%
	योग	**53**	**14**	26.41%
परिषदीय	छात्राएं	23	0	0.00%
	छात्र	24	0	0.00%
	योग	**47**	**0**	0.00%



चित्र संख्या: 4.25

आदमी शब्द को हिन्दी भाषा में लिखने के संबंध में

विश्लेषण- उक्त तालिका संख्या **4.25** एवं चित्र संख्या **4.25** से स्पष्ट होता है कि इसमें भी छात्राओं का 0.00% रहा जबकि छात्रों द्वारा सिर्फ 30.43% ही उत्तर दिया गया है।

विवेचना- उपरोक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि छात्राएं अपनी कक्षा में उपस्थित नहीं रहती हैं तथा छात्र भी अपनी भाषा में रूचि नहीं लेते।

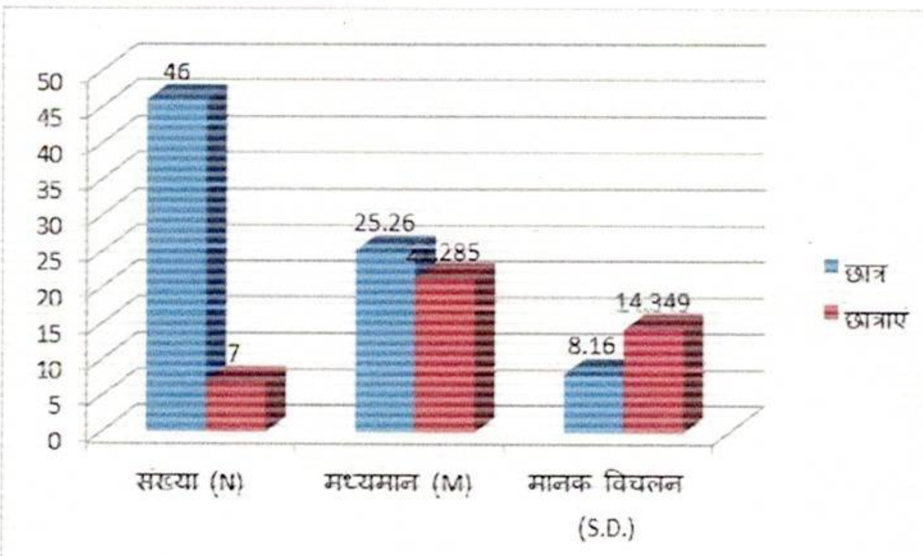
4.3 प्राथमिक स्तर के छात्र-छात्राओं मे उर्दू भाषा प्रवीणता का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना- मदरसा छात्र-छात्राओं की उर्दू भाषा प्रवीणता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 4.41

मदरसा छात्र-छात्राओं की उर्दू भाषा प्रवीणता

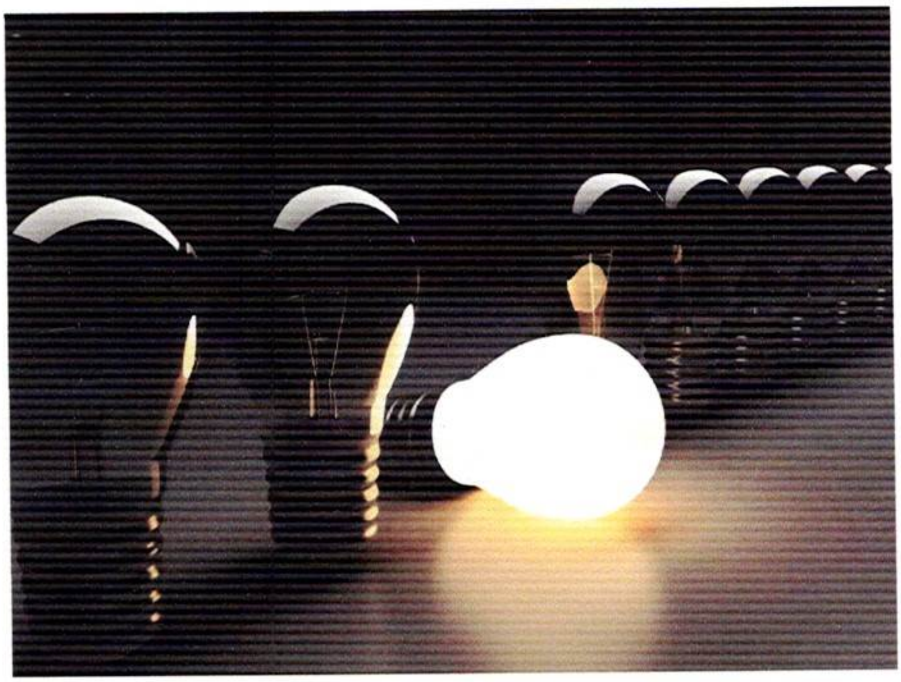
श्रेणी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात (C.R.) गणना मान	स्वतंत्रता (DF)	क्रान्तिक अनुपात (C.R.) तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	46	25.260	8.160	0.72	51	2.00	0.05	सार्थकता अन्तर नहीं है।
छात्राएं	07	21.285	14.349					



उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्राथमिक स्तर की मदरसा छात्रों का Mean Value **25.260** एवं छात्राओं का Mean Value **21.285** है तथा परिगणित CR Value **0.72** है जो कि स्वतंत्रता के अंश 51 के लिये **0.05** सार्थकता स्तर पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान **2.00** से काफी अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना-मदरसा छात्र-छात्राओं की उर्दू भाषा में प्रवीणता में कोई अन्तर नहीं है, **0.05** सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

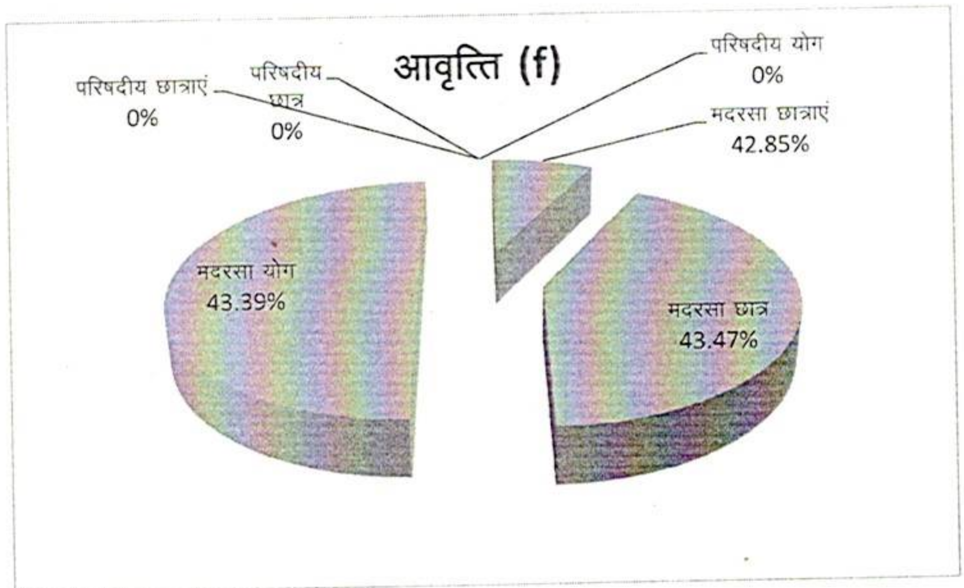
पंचम् अध्याय

सारांश, निष्कर्ष एवं आगामी अध्ययन हेतु सुझाव



"अनुसंधान में सफलता मिल भी सकती है और नही भी। यह पूर्व ज्ञातव्य तथ्यों में योग दे सकता है और नही भी। इसका उद्‌देश्य नवीन ज्ञान भी है अथवा कम से कम ज्ञान में नवीन प्रवाह या परिवर्तन तो है।"

....फैउरिक ऑस्टिन



पंचम अध्याय

5.1 प्रस्तावना

किसी भी शोध का उद्भव आवश्यकता एवं समस्या से होता है, जिसकी पूर्ति के लिए शोधकर्ता वांछनीय उद्देश्यों का निर्धारण कर शोध अध्ययन कार्य का प्रारंभ करता है तथा उनके परिणामों के रूप में अपने उद्देश्यों को वास्तविक रूप प्रदान करता है अतः संपूर्ण शोध कार्य की शोध प्रक्रिया में प्रदत्तो के एकत्रीकरण, उचित व स्पष्ट प्रस्तुतीकरण विश्लेषण तथा व्याख्या के पश्चात यह स्पष्ट हो जाता है कि अध्ययन की उपलब्धियों के आधार पर शोध कार्य का निष्कर्ष निकाला जाए, जिससे शोध पूर्णता को प्राप्त हो सके।

किसी भी शोध कार्य द्वारा प्राप्त परिणामों के लिए यह पूर्ण विश्वसनीयता के साथ नहीं कहा जा सकता, कि यह शोध पूर्णतः शोध क्षेत्र से संबंधित संपूर्ण पहलुओं को पूर्ण करता है, क्योंकि कुछ पहलू अछूते

रह जाते हैं इसलिए परिणामों के साथ-साथ यह भी नितांत आवश्यक है कि शोध अध्ययन के संदर्भ में उन सीमाओं का उल्लेख किया जाए, जिनसे शोध अध्ययन सीमित हो जाता है अतः प्रस्तुत अध्ययन को उपर्युक्त वर्णित बिंदुओं के आधार पर निम्न सोपानों में प्रस्तुत किया गया है।

- शैक्षिक निहितार्थ
- अध्ययन के सुझाव
- भावी शोध के निमित्य सुझाव

5.2 शैक्षिक निहितार्थ

उर्दू भाषा की शैक्षिक स्थिति भारतीय संविधान में वर्णित 22 भाषाओं से स्पष्ट होती है यह वर्तमान में प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर द्वितीय वैकल्पिक भाषा के रूप में अध्ययन अध्यापन में रखी गई है। यह अन्य बोर्ड में पढ़ाई जाने वाली भाषा है जैसे मदरसा बोर्ड आदि देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में उर्दू शिक्षा दी जाती है वैसे उर्दू की प्राथमिक प्रारंभिक शिक्षा की व्यवस्था मदरसों के अलावा सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों में भी की गई है। इसके अलावा जिनकी मातृभाषा कई उर्दू नहीं है, उनके लिए देश के प्रमुख विश्वविद्यालयों में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और एडवांस डिप्लोमा जैसे कोर्सेज का संचालन किया जाता है।

यदि अपने 12वीं तक उर्दू भाषा एक विषय के रूप में पढ़ रखी हैं तो आगे आप उर्दू से बी. ए.एवं एम. ए. के अलावा कोई भी कोर्स उर्दू भाषा में कर सकते हैं। देश के बहुत से विश्वविद्यालय उर्दू भाषा में जनसंचार के लिए पीजी डिप्लोमा कोर्सेज भी संचालित कर रहे हैं।

उर्दू में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, एडवांस डिप्लोमा और पी.जी. डिप्लोमा के सभी कोर्सेज की अवधि 1 वर्ष निर्धारित है जब बैचलर डिग्री के लिए 3 वर्ष तथा मास्टर डिग्री के लिए 2 वर्ष अवधि निर्धारित है उर्दू में बैचलर, मास्टर, एम. एड. एम.फिल. आदि की डिग्री हासिल करने वालों के लिए रोजगार के बहुत से अवसर उपलब्ध हैं क्योंकि इस भाषा की पढ़ाई विदेशों में अनिवार्य रूप से कहीं ना कहीं होती है।

अतः उर्दू शिक्षक बनकर भविष्य में पढ़ाया जा सकता है उर्दू में पी. एच.डी. करने वाले कालेजों और विश्वविद्यालय में बतौर लेक्चर रीडर एवं प्रोफेसर की नौकरी प्राप्त कर सकते हैं। उर्दू में शोध कार्य करने के लिए यू.जी.सी. कई तरह की छात्रवृत्तिया प्रदान करती हैं। देश और विदेश में विभिन्न मंत्रालयों में उर्दू अनुवादक का पद निर्धारित है अन्य भाषा के साथ उर्दू डिग्री वाले इस पद के हकदार बन सकते हैं।

विश्व में प्रायः प्रत्येक देश के दूतावास एक-दूसरे के यहां स्थापित हैं जिसके द्वारा भाषा, साहित्य, संस्कृति, अंतरराष्ट्रीय संबंध स्थापना आदि से संबंधित कार्य संपन्न किए जाते हैं। आकर्षक वेतन एवं अन्य सुविधाओं के लिए उर्दू डिग्री होल्डर इसमें अपना भविष्य बना सकते हैं।

उर्दू विषय अपनाकर अनेक प्रतियोगी विभिन्न राज्य एवं संघ स्तरीय उच्च प्रशासनिक पदों को को भी प्राप्त कर सकते हैं।

अतः उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है, कि उच्च स्तर पर उर्दू अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, परंतु प्राथमिक स्तर पर स्थिति सोचनीय है जो निम्नलिखित है।

I. प्राथमिक स्तर पर उर्दू की स्थिति अत्यंत दयनीय है जिस पर सुधार करना अति आवश्यक है।

II. प्राथमिक स्तर पर छात्र-छात्राओं को उर्दू पाठ्यपुस्तक का वाचन करना भी नहीं आता है।

III. परिषदीय उर्दू मीडियम प्राथमिक विद्यालयों की अपेक्षा मदरसा बोर्ड की स्थिति संतोषजनक है।

इस प्रकार आवश्यक है कि उर्दू शिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता सुधार सुनिश्चित की जाए।

5.3 अध्ययन के सुझाव

शोधार्थिनी द्वारा शोध अध्ययन के निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं-

- ❖ उर्दू मीडियम प्राथमिक विद्यालय में अवलोकन के समय उर्दू अध्यापक अनुपस्थित पाए गए और वह लंबी अवधि से विद्यालय नहीं आ रहे थे आवश्यक है कि वह इस गतिविधि में सुधार करें।
- ❖ द्वितीय अवलोकन के दौरान यह पाया गया कि उर्दू अध्यापक को उर्दू में अपना नाम भी लिखना नहीं आता, अतः सरकार को उर्दू की शैक्षिक गुणवत्ता सुधारने की आवश्यकता है तथा इनकी नियुक्ति के लिए कोई योजना पर योग्यता परीक्षा प्रस्तावित की जाए।
- ❖ पाठ्य पुस्तकों की चित्रात्मक स्थिति में सुधार किया जाए, जिससे पुस्तक अध्ययन में आकर्षक हो।
- ❖ यूपी बोर्ड पाठ्य- पुस्तकों में रुच्यात्मक पाठों की कमी पाई गई है। अतः छात्रों की रुचि को ध्यान में रखते हुए कुछ विशिष्ट क्रियाकलापों का पाठ्य पुस्तक में समावेशन किया जाना चाहिए।
- ❖ उर्दू शिक्षा से संबंधित आधुनिक आयामों के अंतर्गत जैसे- उर्दू ब्लॉग यू-ट्यूब चैनल, ई-बुक्स में प्रचुर मात्रा में उर्दू संबंधी नवीन सामग्री एवं बच्चों के लिए रुच्यात्मक कहानियां उपलब्ध हैं जिनको विद्यालय में कभी कभी डिजिटल कक्षा के माध्यम से छात्र-छात्राओं के सम्मुख प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

❖ छात्र-छात्राओं की उर्दू में प्रवीणता के लिए आवश्यक है कि उनके लिए उर्दू कक्षाओं की अवधि निर्धारित की जाए ,जिससे छात्र कक्षा में उपस्थित रहे।

❖ उर्दू के विभिन्न सॉफ्टवेयरो की व्यावहारिक कठिनाइयों का अध्ययन किया गया है जैसे- वर्तनी जांचक , प्रवाचक, उर्दू शब्दकोश अनुवादक एवं टंकण आदि का शिक्षक को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए तथा शिक्षक द्वारा छात्रों को सिखाया जाना चाहिए।

5.4 भावी शोध के निमित्त सुझाव

भावी शोध के निमित्त निम्नलिखित सुझाव हैं-

❖ प्रस्तुत शोध प्रबंध शोधार्थिनी द्वारा प्राथमिक स्तर तक सीमित रखा गया है, किंतु भविष्य में इसका अध्ययन माध्यमिक तथा उच्च स्तर तक किया जा सकता है।

❖ प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध शोधार्थिनी द्वारा यू.पी. बोर्ड तथा मदरसा बोर्ड तक सीमित रखा गया है तथा भविष्य में इसका अध्ययन विभिन्न बोर्डों पर किया जा सकता है जैसे एन.सी.ई.आर. टी. , सी. बी.एस.ई. आदि।

❖ प्रस्तुत लघु शोध में हैदराबाद,महाराष्ट्र कश्मीर के शोध कार्य ही सम्मिलित किए गए हैं तथा भविष्य में अन्य राज्यों के शोध कार्यों का अध्ययन किया जा सकता है।

❖ पुस्तकों का मूल्य इतना कम हो कि सभी छात्र आसानी से खरीद सकें।

❖ पाठ्य- पुस्तकों में लिखित सामग्री के साथ- साथ प्रदर्शनात्मक सामग्री भी उपलब्ध हो,जिससे छात्रों को पाठ्य-पुस्तके के अपनी ओर आकर्षित कर सकें।

❖ पाठ्य पुस्तकों की छपाई पर सरकार ध्यान दे तथा इस कार्य को यह स्वयं करवाएं।

❖ पाठ्य पुस्तकों में पाठ से संबंधित "माने" तथा "आओ करके सीखे" क्रिया अवश्य होनी चाहिए जिससे छात्रों का मूल्यांकन करने में सरलता हो सके।

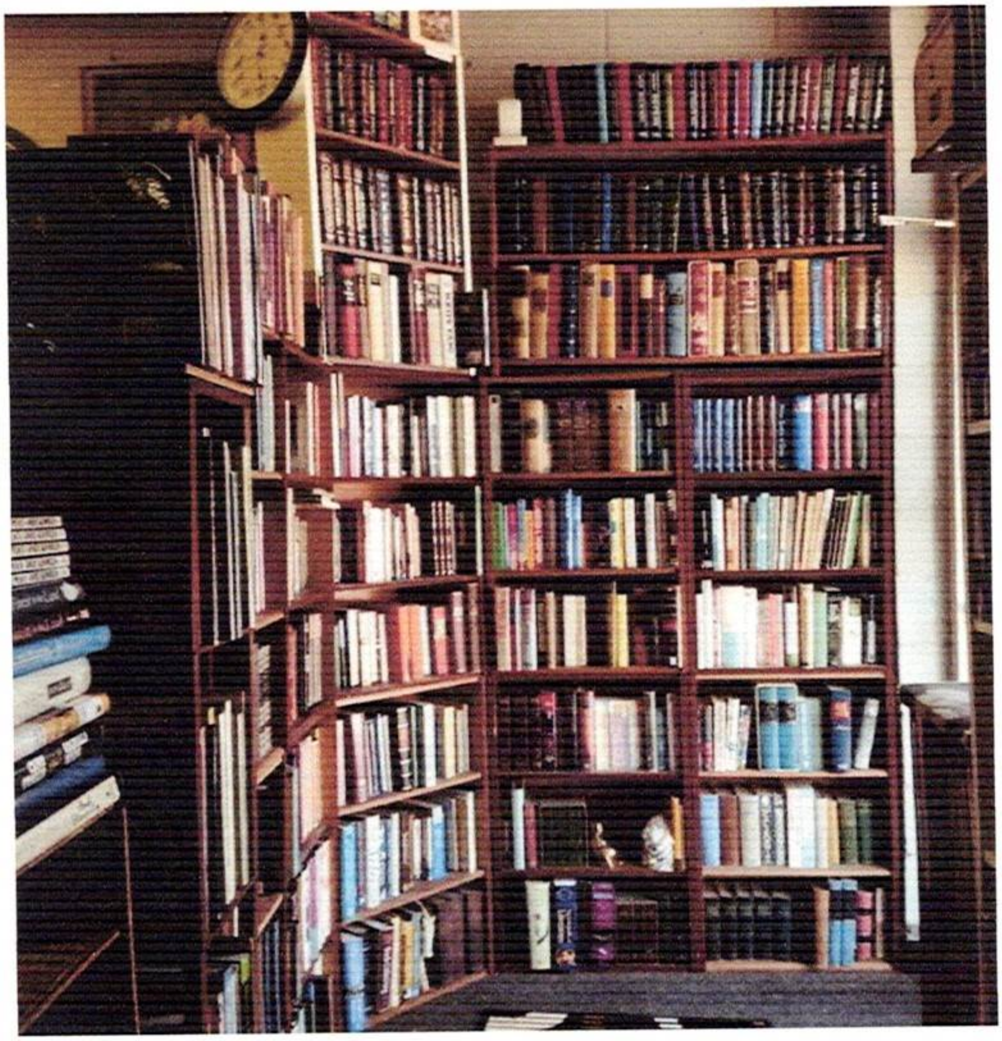
❖ उर्दू पाठ्य पुस्तकों में नवीनतम सामग्री का अभाव है जिसमें कुछ नवीन तथ्यो को सम्मिलित किया जाना आवश्यक है।

❖ पाठ्य पुस्तकों को आकर्षित बनाने हेतु रंग-बिरंगे चित्रों का उपयोग किया जाना चाहिए।

❖ पाठ्य पुस्तकों में संस्करण का अभाव है अतः संस्करण वर्ष अवश्य लिखा जाना चाहिए।

- पाठ्य पुस्तकों में इस्लाम धर्म से संबंधित सामग्री का बाहुल्य है अतः पाठ्य- पुस्तकों को धर्म विशेष से नहीं जोड़ा जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची



सन्दर्भ सूची

1. https://youtu.be/HgSMMOfJRoQ
2. https://youtu.be/gQ6zkcUwr1o
3. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/167113
4. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/205821
5. https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=http://paarthsarthi.blogspot.com/2017/09/207.html%3Fm%3D1&ved=2ahUKEwitoc_g25jjAhWLfH0KHdQXCtYQFjACegQIARAB&usg=AOvVaw27ovPKQ8vv2V4H80AFL3fA
6. https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=https://shabd.in/post/17232/urdu-bhasha-utpati&ved=2ahUKEwitoc_g25jjAhWLfH0KHdQXCtYQFjAEegQIBRAB&usg=AOvVaw3ojthowrSOto4Ydk8RXdQm
7. https://images.app.goo.gl/wWjo8JVGHKCeqXtu9
8. https://images.app.goo.gl/93LApWwgyRfSXdmj7
9. https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=http://teacheramit.blogspot.com/2016/08/blog-post_60.html%3Fm%3D1&ved=2ahUKEwj386vZ35jjAhVEYysKHf5HDTYQFjAHegQIAhAB&usg=AOvVaw3QHfZxe_VMegSIDu3CHvQn
10. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%BE
11. http://www.mehtvta.com/essay-primary-education/
12. https://m.bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%AE%E0%A5%81%E0%A4%97%E0%A4%BC%E0%A4%B2%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A5%80%E0%A4%A8_%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0

%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%BE_%E0%A4%8F%E0%A4%B5%E0%A4%82_%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF

13. https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=https://archive.hindi.siasat.com/news/%25E0%25A4%2589%25E0%25A4%25B0%25E0%25A5%258D%25E0%25A4%25A6%25E0%25A5%2582-%25E0%25A4%25B6%25E0%25A4%25BF%25E0%25A4%2595%25E0%25A5%258D%25E0%25A4%25B7%25E0%25A4%25BE-%25E0%25A4%2595%25E0%25A5%2580-%25E0%25A4%25B5%25E0%25A4%25B0%25E0%25A5%258D%25E0%25A4%25A4%25E0%25A4%25AE%25E0%25A4%25BE%25E0%25A4%25A8-%25E0%25A4%25B8-827752/amp/&ved=2ahUKEwjW5PqTqcPjAhVKvI8KHdgyAL0QFjAAegQIARAB&usg=AOvVaw2y9nK4x7AnaTRCDtWoURZ1&ampcf=1&cshid=1563619674619
14. https://jaunpur.prarang.in/posts/2488/History-Of-Urdu-Language
15. https://www.google.com/search?q=madhya+kaal+me+urdu+shiksha&oq=madhya+kaal+me+urdu+shiksha&aqs=chrome..69i57j33.49774j0j4&client=ms-android-lava&sourceid=chrome-mobile&ie=UTF-8
16. https://www.rajasthanhistory.com/blog/history-of-communal-problem-in-india-and-hindu-resistance/problem-of-communalism-during-british-rule
17. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%89%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%82_%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF
18. http://www.indiaolddays.com/mughal-education-and-literature/
19. http://teacheramit.blogspot.com/2016/08/blog-post_60.html?m=1

20. http://www.aligarhmedia.com/different-breeds-give-different-meaning-to-urdu-language/
21. https://m.jagran.com/lite/uttar-pradesh/sambhal-city-urdu-school-17929652.html
22. https://mhrd.gov.in/hi/educational-development-minorities-hindi
23. http://ncmei.gov.in/index1.aspx?lsid=80&lev=2&lid=83&langid=2
24. https://mhrd.gov.in/hi/language_teachers-hindi
25. https://archive.hindi.siasat.com/news/%E0%A4%89%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%82-%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%BE-%E0%A4%95%E0%A5%80-%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%A8-%E0%A4%B8-827752/
26. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A5%E0%A5%80
27. http://www.businessdictionary.com/definition/ability.html
28. https://www.franchiseindia.com/hi/education/Elementary-Education-in-India.9380

परिशिष्ट

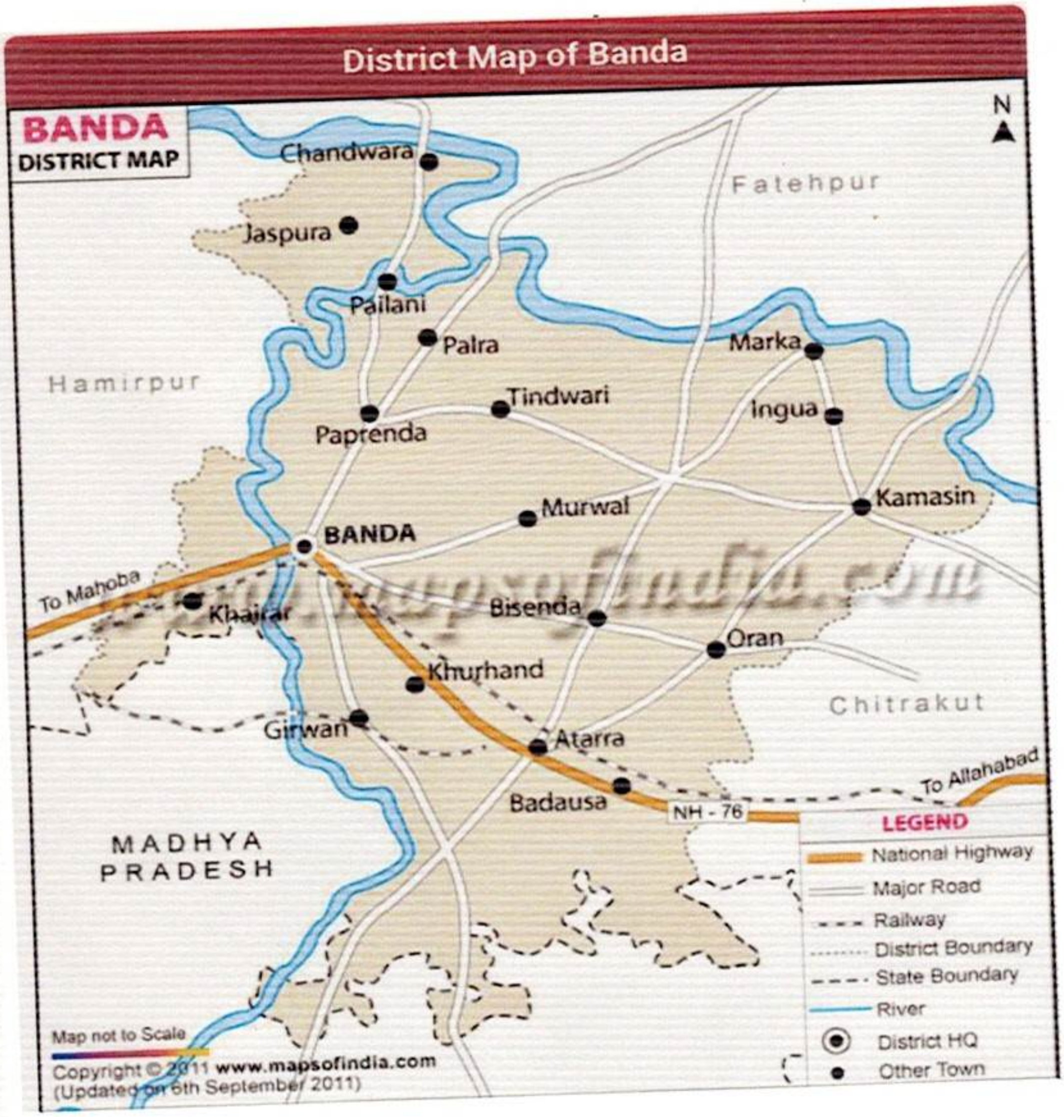


★ पर्यावरण जागरूकता अभियोग्यता मापनी –डॉ. प्रवीण कुमार झा

★ साक्षात्कार अनुसूची (अर्द्धसंरचित)

परिशिष्ट- 1

बांदा का मानचित्र



اردو بھاسا پروینتا

= پرشناولی =

شودھارتھی	مارگ درشک
پائل چورسیا	ڈاکٹر راجیو اگروال

سوچنائیں بھریں -

۱- نام

۲- درجہ

۳- اسکول

۴- تاریخ

بھاگ ایک - (دوورن)

۱- والد کا نام

۲- امّی کا نام

۳- سہیل کا نام

۴- دوست کا نام

۵ پیشہ

بھاگ دو - اصل حرف

۱- • اقتر • افسر • اقتر

۲- • روزا • روجا • روضا

۳- • ظادا • زادا • جادا

۴- • شرد • سرد • صرد

۵- • ستارا • صتارا • سترا

ملان کریں

۶- ج + ز + ر + ت

۷- ش + ر + ب + ت

۸- ب + ت + خ

۱۰- س + ر + پ + ط

۱۱- ا + م + ن

بھاگ تین

اردو بنائیے - ہندی بنائیے

۱- शहजादा

۲- रमजाना

۳- खूबसूरत

۴- खैरात

۵- मीनार

۶- بلبل

۷- حیدرآباد

۸- ہندوستان

۹- عورت

۱۰- آدمی

- بھاگ چار -

۱- راشٹرپتی کا نام -

۲- پردھان منتری کا نام -

۳- راشٹریہ پھول -

۴- راشٹریہ گیت -

۵- راشٹریہ پنچھی -

۶- راشٹر گان کی لاش -

۷- راشٹر بھاشا -

प्राथमिक स्तर पर उर्दू माध्यम के विद्यार्थियों की उर्दू भाषा में प्रवीणता का अध्ययन

(बाँदा जनपद के विशेष सन्दर्भ में)



9 789359 966625